● सीधी, सिंगरौली,मऊगंज, रीवा एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित ● website-https://vindhyatiger.in ● epaper-https://epaper.vindhyatiger.in ● वर्ष : 37, अंक 125, पृष्ठ : 08, सीधी, बुधवार, 11 जून 2025 - मूल्य : 2.00 रुपया मात्र

दैनिक समाचार पत्र

विन्ध्य टाइगर

हक की बात, बुलंदी के साथ

नकली और घटिया कीटनाशकों तथा बीजों की बिक्री पर गहरी चिंता व्यक्त की 5

एमएस धोनी आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल 6

प्रदेश की 20 हजार 600 सुदूर बसाहटों को मुख्य मार्ग से जोड़ने 21 हजार 630 करोड़ रूपये की सैद्धांतिक स्वीकृति

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद का निर्णय

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक मंगलवार को मंत्रालय में सम्पन्न हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा मुख्यमंत्री मजरा-टोला सड़क योजना अंतर्गत प्रदेश के सुदूर बसाहटों मजरा/टोला /धोनी/पुरा इत्यादि को बारहमासी सम्पर्कता प्रदान करने 21 हजार 630 करोड़ रूपये की सैद्धांतिक स्वीकृति दी गई। स्वीकृति अनुसार योजना का क्रियान्वयन 2 चरणों में किया जायेगा। वित्तीय वर्ष 2025-26 से 2029-30 तक पहले चरण एवं वित्तीय वर्ष 2030-31 से 2034-35 तक दूसरे चरण में कुल अनुमानित 30 हजार 900 कि.मी. मार्ग का निर्माण होगा। योजना का क्रियान्वयन राज्य मद से किया

जायेगा। योजना के संबंध में मध्यप्रदेश ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण की साधिकार समिति को निर्णय लिये जाने के लिए अधिकृत किया गया है।

स्वीकृति अनुसार न्यूनतम 20 आवास और 100 से अधिक जनसंख्या वाले 6 हजार वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्रफल वाले ऐसे क्षेत्र, जिसके 50 मीटर की दूरी में पूर्व से बारहमासी सड़क न हो, को बसाहट के अंतर्गत लिया जायेगा। इसके लिए बसाहट की जनसंख्या के घटते क्रम में विधानसभा क्षेत्रवार प्राथमिकता सूची तैयार की जायेगी। सांसद, क्षेत्रीय विधायक और जिला पंचायत सदस्यों के परामर्श पर ग्रामीणजनों की स्थानीय आवश्यकता जैसे - सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि के आधार पर बसाहटों की प्राथमिकता में कलेक्टर द्वारा लिपिबद्ध कारणों से सूची में परिवर्तन किया जा सकेगा। अंतिम प्राथमिकता सूची का राज्य स्तर पर प्रकाशन किया जायेगा। योजना अंतर्गत 20 हजार 600 बसाहटों को मुख्य मार्ग से जोड़ने के लिए लगभग 30 हजार 900 किलोमीटर मार्ग का निर्माण किया जायेगा।

मंत्रि-परिषद द्वारा प्रदेश में तुअर दाल उद्योगों की आवश्यकता के दृष्टिगत प्रदेश में बाहर से आयातित तुअर पर मंडी शुल्क से पूर्णतः छूट दिए जाने का निर्णय लिया गया। छूट दिए जाने से प्रदेश में तुअर दाल की पर्याप्त उपलब्धता होगी। साथ ही परिवहन बढेगा और रोजगार में वृद्धि होगी।

मंत्रि-परिषद द्वारा झाबुआ, सिंगरौली, देवास और नर्मदापुरम में कामकाजी महिलाओं के जीवन को आसान बनाने के उद्देश्य से इस्स्छ्ठ (स्पेशल असिस्टेंस टू स्टेट्स फॉर कैपिटल इनवेस्टमेंट) 2024-25 योजना अंतर्गत स्वीकृत 350 सीट्स की क्षमता वाले 4 वर्किंग वूमन हॉस्टल के निर्माण का सैद्धांतिक अनुमोदन दिया गया है। योजना पी.पी.पी मोड में संचालित की जायेगी। योजना पर 40 करोड़ 59 लाख रूपये खर्च होंगे।

भारत बना वैश्विक रक्षा निर्यातक : राजनाथ

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साहसी और दूरदर्शी नेतृत्व में बीते 11 वर्षों में भारत का रक्षा क्षेत्र एक बड़ी परिवर्तन से गुजरा है। अब भारत एक आयात-आधारित देश से बदलकर एक विश्वसनीय वैश्विक निर्यातक बन गया है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि यह 11 साल भारत की ताकत, आत्मनिर्भरता और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में उठाए गए मजबूत कदमों का प्रतीक हैं।

राजनाथ सिंह ने बताया कि 2014-15 में जहां रक्षा निर्यात सिर्फ 1,940 करोड़ रुपये था, वहीं 2024-25 में यह बढ़कर 23,622 करोड़ रुपये हो गया है। उन्होंने 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' जैसे अभियानों की सफलता का जिक्र करते हुए कहा कि इस दौरान भारत ने अपने पहले स्वदेशी एयरक्राफ्ट कैरियर

आईएनएस विक्रांत, मल्टी-रोल कॉम्बैट हेलिकॉप्टर एलसीएच प्रचंड, तेजस फाइटर जेट, ब्रह्मोस मिसाइल जैसे महत्वपूर्ण हथियार सिस्टम खुद बनाए हैं।

राजनाथ सिंह ने कहा, आज भारत 100 से ज्यादा देशों को रक्षा उत्पाद निर्यात कर रहा है। हमारे रक्षा कॉरिडोर में भारी निवेश हो रहा है और सेना का आधुनिकीकरण तेजी से हो रहा है। एक अन्य पोस्ट में उन्होंने एक वीडियो भी साझा किया जिसमें ऑपरेशन सिंदूर, विभिन्न सैन्य अभ्यास, पूर्वोत्तर में उग्रवाद में कमी और सशस्त्र बलों में नारी शक्ति को दिखाया गया है।

राजनाथ सिंह ने कहा, रक्षा शक्ति के 11 वर्ष के दौरान, भारत की रक्षा क्षमताएं पहले से कहीं ज्यादा मजबूत हुई हैं। हमारे पास अब स्वदेशी हथियार, आधुनिक सेनाएं, सुरक्षित सीमाएं और दुनिया का विश्वास है। यह आत्मनिर्भर भारत की ओर एक गर्वित कदम है।

नया भारत अब मुंहतोड़ जवाब देता है: योगी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 11 वर्ष का कार्यकाल भारत वर्ष के स्वर्णिम काल के रूप में जाना जाएगा। इस कार्यकाल में पीएम मोदी ने भारत को वैश्विक पहचान दी है। कांग्रेस समेत अन्य अस्थिर सरकारों में आमजन का विश्वास टूट गया था। वैश्विक स्तर पर भारत की छवि तार-तार हो गई थी। पीएम मोदी के भ्रष्टाचार, तुष्टिकरण और परिवारवाद से मुक्त नेतृत्व ने देश को विकसित और आत्मनिर्भर बनाकर अगले 25 वर्ष के लिए कार्ययोजना प्रस्तुत की है। इन 11 वर्षों ने सामाजिक और संस्कृतिक पक्ष के

साथ ही सेवा, सुशासन के साथ आर्थिक मोर्चे पर देश को एक नई पहचान दी है। शासन की नीति स्पष्टता, कार्य प्रणाली की पारदर्शिता और जनता के प्रति जवाबदेही शासन की नई पहचान बनी है। विकास केवल नारे नहीं हैं। इन वर्षों ने विरासत और विकास का समन्वय करते हुए हुए देश को दुनिया में नई पहचान दिलाई। अब चेहरा देख कर नहीं बल्कि जरूरत देख कर सरकारी योजनाओं का लाभ दिया जाता है। मुख्यमंत्री योगी मोदी सरकार के 11 साल पूरे होने पर भाजपा मुख्यालय में मीडिया को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि पिछले 11 साल में राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस को हमने देखा है। कोई हम पर युद्ध थोपेगा तो उसका जवाब सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और आपरेशन सिंदूर से दिया जाएगा। अब भारत दुनिया में शांति की रट लगाने वाला देश नहीं है बल्कि युद्ध थोपने पर कड़ा जवाब देने वाला देश है।

आप सांसद ने यूपी की स्वास्थ्य सेवाओं पर उठाए सवाल

लखनऊ। आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह ने मंगलवार को मीडिया को संबोधित करते हुए यूपी की स्वास्थ्य सेवाओं पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने बदायूं के महिला अस्पताल का जिक्र करते हुए कहा कि यहां पर सीपैक वेंटिलेटर न होने से हर महीने 25 से 30 बच्चों की मौत हो रही है। ये संवेदनहीनता की परकाष्ठा है। मीडिया खबरों के मुताबिक यहां पर सीपैक का वेंटिलेटर लाया गया पर इसे चलाने के लिए स्टाफ को प्रशिक्षण नहीं दिया गया और बच्चों की मौत होती रही।

अब हम आतंकवाद के साथ और नहीं जीएंगे, हमला हुआ तो फिर जवाब देंगे: जयशंकर

ब्रूसेल्स। ह्यभारत और पाकिस्तान के बीच हुए संघर्ष के करीब तीन हफ्ते बाद भारतीय विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने पाकिस्तान को चेतावनी दी है और कहा है कि अगर फिर से आतंकी हमला हुआ तो भारत फिर से करारा जवाब देने में बिल्कुल नहीं हिचकेगा। जयशंकर इन दिनों ब्रूसेल्स के दौरे पर हैं। वहां एक इंटरव्यू के दौरान जयशंकर ने कहा कि %अगर आतंकी ठिकाने पाकिस्तान के भीतर मौजूद हैं तो हम पाकिस्तान में भीतर जाकर ही हमला करेंगे।% भारत सरकार की

तरफ से लगातार कहा जा रहा है कि ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है और अगर पाकिस्तान की तरफ से फिर से आतंकी हमला हुआ तो भारत फिर से सैन्य कार्रवाई से हिचकेगा नहीं। विदेश मंत्री ने भी सरकार के इसी स्टैंड को दोहराया। विदेश मंत्री ने कहा कि आतंकवाद इस देश (पाकिस्तान) की राष्ट्रीय नीति का हिस्सा है। यही समस्या है।

बीती अप्रैल में भारत के जम्मू कश्मीर में आतंकी हमला हुआ था, जिसमें 26 निर्दोष पर्यटकों की धर्म पूछकर हत्या कर दी गई थी। भारत ने इसका आरोप पाकिस्तान समर्थित आतंकी संगठन पर लगाया। इसके बाद मई में भारत ने पाकिस्तान में मौजूद आतंकी ठिकानों पर हमला किया, जिसके जवाब में पाकिस्तान ने भारत पर हमले की कोशिश की।

कभी नहीं सोचा था पार्टी में दरार आएगी: शरद पवार

पुणे। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के स्थापना दिवस समारोह में शरद पवार का दर्द सभी के सामने आ गया। उन्होंने कहा कि कभी नहीं सोचा था कि एनसीपी में दरार आ जाएगी। इस बीच एनसीपी (शरदचंद्र पवार) के प्रदेश अध्यक्ष जयंत पाटिल ने पद छोड़ने के संकेत दे दिए हैं। उन्होंने नए चेहरों को कमान सौंपने की इच्छा जताई है। शरद पवार ने मंगलवार को कहा कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि 26 साल पहले बनी उनकी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में विभाजन होगा। उन्होंने चुनौतियों के बावजूद इसे आगे बढ़ाने के लिए अपने संगठन के कार्यकर्ताओं की सराहना की।

टोंक में बनास नदी में बड़ा हादसा

नहाने गए 11 युवक डूबे, आठ की मौत

टोंक। राजस्थान के टोंक में मंगलवार को एक दर्दनाक हादसा हो गया, जब जयपुर से आए 11 युवक बनास नदी में नहाने उतरे और तेज बहाव में बह गए। सभी युवक पिकनिक मनाने के लिए दोपहर करीब 12 बजे नदी के पुराने पुल के पास पहुंचे थे।

स्थानीय लोगों के मुताबिक, सभी युवक एक साथ नदी में नहाने उतरे, लेकिन कुछ देर बाद तेज बहाव के कारण एक-एक कर गहराई में चले गए और डूबने लगे। स्थानीय ग्रामीणों ने शोर मचाया और तुरंत पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही टोंक पुलिस, प्रशासन और एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंची और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया। अब तक 8 युवकों के शव बरामद किए जा चुके हैं, जबकि बाकी 3 की तलाश जारी है। सभी को सआदत अस्पताल लाया गया, जहां डॉक्टरों ने 8 युवकों को मृत घोषित कर दिया।

सोनम ने ही राजा को दिया था खाई में धक्का, आरोपियों ने बताई हत्या के पहले की खौफनाक सच्चाई

इंदौर। इंदौर के राजा रघुवंशी और सोनम के केस में कई बड़े खुलासे हुए हैं। राजा की हत्या की मास्टरमाइंड उसकी पत्नी सोनम ही निकली है। पुलिस ने सोनम के साथ में चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इंदौर पुलिस सूत्रों के अनुसार पूछताछ में आरोपियों ने जो कहानी बताई है वह बेहद खौफनाक है। इसमें पता चलता है कि सोनम ने कितनी साजिश के साथ राजा की हत्या की योजना बनाई थी।

सोनम और राज के बीच पांच महीने से प्रेम प्रसंग चल रहा था।

राज ने कबूल किया कि सोनम से अफेयर 4 से 5 माह का था। पिता के हार्ट पेशेंट होने से सोनम लव मैरिज नहीं कर पा रही थी। पिता समाज में शादी करना चाहते थे इसलिए उसने राजा से शादी को हां कर ली थी। उसने पहले ही तय कर लिया था कि शादी के बाद राजा को मारकर राज के साथ रहने लगेगी। सोनम ने राज से कहा था कि जब मैं विधवा हो जाऊंगी, फिर तुम मुझसे शादी कर लेना। तब मेरे परिवार वाले भी हमारी शादी के लिए मान जाएंगे।

इसके बाद राजा और सोनम की 11 मई को शादी हुई। दोनों के परिवार बहुत खुश थे। सोनम भी परिवार में घुल मिल गई और कभी अपनी साजिश का शक नहीं होने दिया। 16 मई को सुपर कॉरिडोर के कैफे में राजा की हत्या की साजिश रची गई। प्रेमी राज ने दोस्त विशाल चौहान, आकाश राजपूत और आनंद कुर्मी को साथ में लिया। उसी रात छह घंटे तक फोन पर सोनम को हत्या की पूरी योजना समझाई गई। हत्या के पहले राज ने आरोपियों को 50 हजार, एक कीपैड, एक एंड्रॉइड मोबाइल और नई सिम दिलाई। ये सब चीजें आरोपियों ने सोनम को दे दी।

प्राइवेट स्कूलों में फीस वृद्धि की मनमानी रोकने के लिए अध्यादेश के जरिए पास किया नया बिल

नई दिल्ली। मंगलवार को दिल्ली सरकार की आठवीं बैठक हुई। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में एक बड़ा फैसला लिया गया है। दिल्ली स्कूल शिक्षा (फीस निर्धारण एवं विनियमन में पारदर्शिता) विधेयक, 2025 को कैबिनेट ने पास कर दिया है। अब बिल को उपराज्यपाल और फिर राष्ट्रपति के पास भेजा जाएगा। इनके हस्ताक्षर के बाद यह कानून बन जाएगा। फिलहाल इस बिल को अध्यादेश

के तौर पर मंजूरी दे दी गई है। बता दें कि सरकार अब अध्यादेश के जरिये प्राइवेट स्कूलों की फीस बढ़ाने पर रोक लगाएगी। यह नियम 1 अप्रैल 2025 से लागू होगा। इस फैसले से दिल्ली के प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता के लिए राहत मिलेगी।

केरल तट के पास जल रहे जहाज में आग बुझाने की कोशिश जारी

तिरुवनंतपुरम। केरल तट के नजदीक जल रहे सिंगापुर के झंडे वाले जहाज की आग बुझाने को कोशिश आज भी जारी है। भारतीय नौसेना के जहाज आईएनएस सूरत ने क्रू के 18 सदस्यों को सुरक्षित बचा लिया है। वहीं क्रू के चार सदस्य अभी भी लापता हैं। जहाज में रविवार को आग लगी थी और मंगलवार को भी नौसेना, तटरक्षक बलों द्वारा संयुक्त और समन्वित बचाव अभियान चलाया जा रहा है।

भारतीय तटरक्षक बल के जहाज सचेत और समुद्र प्रहरी आग पर काबू पाने की कोशिशों में जुटे हैं। तटरक्षक बल का डोर्नियर एयरक्राफ्ट बचाव अभियान का हवाई सर्वे कर रहा है।

आगे या पीछे, कोई भी कदम उठाने को तैयार: राउत

मुंबई। शिवसेना यूबीटी नेता संजय राउत से जब मनसे से संभावित गठबंधन को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि शिवसेना यूबीटी आगे या पीछे, कोई भी कदम उठाने को तैयार है और राजनीतिक अहंकार जैसी कोई बात नहीं है। राउत ने कहा कि मराठी मानुष की भलाई के लिए जो भी संभव होगा, वे करने के लिए तैयार हैं। शिवसेना यूबीटी और राज ठाकरे की मनसे के बीच गठबंधन को लेकर बीते कई दिनों से चर्चा चल रही है और दोनों तरफ से इसे लेकर सकारात्मक बयानबाजी भी सामने आई है। अब शिवसेना यूबीटी के राज्यसभा सांसद संजय राउत से जब पूछा गया तो उन्होंने कहा कि %हम आगे या पीछे, कोई भी कदम उठाने के लिए तैयार हैं और कोई राजनीतिक अहंकार की बात नहीं है। संजय राउत का यह बयान ऐसे समय सामने आया है, जब मनसे ने हाल ही में एक बयान में कहा था कि अगर शिवसेना यूबीटी मनसे के साथ गठबंधन करना चाहती है तो उसके लिए शिवसेना यूबीटी को पहल करनी होगी। बीते दिनों राज ठाकरे ने एक पॉडकास्ट के दौरान शिवसेना यूबीटी के साथ संभावित गठबंधन को लेकर बयान दिया था। उसके बाद शिवसेना यूबीटी प्रमुख उद्धव ठाकरे ने भी गठबंधन को लेकर सकारात्मक बयान दिए, जिससे दोनों पार्टियों में गठबंधन की चर्चा छिड़ गई थी।

नितिन गडकरी ने बताई भविष्य की ट्रांसपोर्ट योजना

नई दिल्ली। देश के बड़े शहरों में ट्रैफिक की समस्या को दूर करने के लिए केंद्र सरकार नए और बेहद आधुनिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम पर काम कर रही है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने हाल ही में बताया कि दिल्ली और बंगलूरू जैसे शहरों में हवाई पॉड सिस्टम और फ्लैश-चार्जिंग इलेक्ट्रिक बसें लाने की योजना बनाई जा रही है। इन योजनाओं का मकसद शहरों में ट्रैफिक जाम से राहत दिलाना और यात्रियों के लंबे व थकाऊ सफर को आसान बनाना है।

नितिन गडकरी ने कहा कि दिल्ली के धौला कुआं से मानेसर के बीच सड़क पर भारी ट्रैफिक को देखते हुए वहां हवाई पॉड सिस्टम शुरू करने की योजना है। उन्होंने बताया कि यह पॉड सिस्टम हवा में चलेगा और इस पर काम शुरू किया जा रहा है। केंद्रीय मंत्री ने समाचार एजेंसी एएनआई को बताया, हम धौला कुआं से मानेसर तक हवा में पॉड सिस्टम शुरू करना चाहते हैं क्योंकि इस सड़क पर बहुत अधिक यातायात है। उन्होंने यह भी कहा कि इसी तरह का एक अध्ययन बंगलूरू में भी किया जा रहा है। जो खास तौर पर बारिश के दौरान अपने भयंकर ट्रैफिक जाम के लिए बदनाम है। पॉड बेस्ड ट्रांसपोर्ट सिस्टम में छोटे-छोटे ड्राइवर-रहित इलेक्ट्रिक वाहन होते हैं, जो

ऊंचे ट्रैक पर चलते हैं। ये या तो ऊपर की रेल से लटकते हैं या उसके ऊपर चलते हैं। यह एक ऑन-डिमांड टैक्सी जैसी सुविधा देता है, जिसमें यात्री जरूरत पड़ने पर पॉड बुला सकते हैं और बिना किसी रुकावट के अपने गंतव्य तक पहुंच सकते हैं। एक पॉड में आमतौर पर 5 से 6 लोग बैठ सकते हैं। गडकरी ने आगे बताया कि उत्तराखंड और कश्मीर जैसे पहाड़ी राज्यों में दो पहाड़ों को जोड़ने के लिए डबल-डेकर बसों की योजना भी बनाई जा रही है। ये बसें आधुनिक तकनीक से लैस होंगी और मुश्किल इलाकों में भी आसानी से आवाजाही सुनिश्चित करेंगी। उन्होंने यह भी बताया कि नागपुर में एक हाई-स्पीड फ्लैश-चार्जिंग इलेक्ट्रिक बस की शुरुआत हो चुकी है। यह बस 135 सीटों वाली है और 120 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से चलेगी। खास बात यह है कि यह हर 40 किलोमीटर पर सिर्फ 30 सेकंड के लिए रुकेगी, ताकि यात्री चढ़-उतर सकें और उसी समय बस चार्ज भी हो जाएगी। इस बस में एग्जीक्यूटिव क्लास की सीटें और हर सीट के सामने टीवी भी होंगे। गडकरी के अनुसार, यह बस कम बैटरी पावर से चलेगी, जिससे इसकी लागत कम होगी और किराया डीजल बसों की तुलना में लगभग 30 प्रतिशत सस्ता होगा। अगर नागपुर की यह योजना सफल होती है, तो सरकार इसे दिल्ली-जयपुर, दिल्ली-देहरादून, बंगलूरू-चेन्नई, मुंबई-नासिक और पुणे जैसे रूट्स पर भी शुरू करने की तैयारी में है। इससे आने वाले समय में यात्रियों को एक सस्ता, तेज और आरामदायक ट्रांसपोर्ट विकल्प मिलेगा।

सिंगरौली की सड़को का खस्ताहाल, गड्ढो में तब्दील

बेखौफ दौड़ रहे ओवरलोड वाहनों पर कार्यवाही करने जिम्मेदारों का छूट रहा पसीना

ओवरलोड वाहनो से वसूली के लग रहे आरोप

सिंगरौली। जिले की सड़का की हालत इन दिनो खस्ताहाल बना हुई है। क्योंकि सिंगरौली की सड़को पर बेखौफ दौड़ रहे ओवरलोड वाहनों पर कारवाही करने जिम्मेदारों का पसीना छूट रहा है। वहीं आरोप यह भी लग रहा है कि ओवरलोड वाहनो से जमकर वसूली भी की जा रही है। जिसके चलते वाहन मालिक चालको को सख्त हिदायत दे रखे है कि गाड़ियों में जितना ज्यादा से ज्यादा हो सके उतना ज्यादा ओवरलोड करो। क्योंकि हर जगह कमीशन देना पड़ता है। जिले में तेज रफ्तार, ओवरलोड व ट्रिप के चक्कर में आए दिन सड़क दुर्घटनाएं हो रही हैं लेकिन इन दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने में जिम्मेदार दिलचस्पी नही दिखा रहे हैं।

गौरतलब हो कि जिले में बेखौफ होकर दौड़ रहे रेत व कोयला से लोड ओवरलोड वाहन सड़को की रीढ़ तोड़ रहे है। इन हैवी वाहनो के चलते सड़क पूरी तरह से खस्ताहाल होती जा रही है। यही कारण है कि दुर्घटनाओं का ग्राफ तेजी से बढ़ रहा है। रेत वाहनो पर शिकंजा कसने में खनिज एवं पुलिस विभाग बेपरवाह बना हुआ है। हाईवा वाहनो में निर्धारित क्षमता से ज्यादा रेत लोडकर परिवहन किया जा रहा है। लेकिन इन ओवरलोड वाहनो पर कार्रवाही करने के लिए खनिज विभाग एवं पुलिस प्रशासन इन रेत कारोबारियों के आगे नतमस्तक साबित हो रहा है। जिले में स्थित नदियो से रेत कारोबारी व कोयला हाईवा वाहन में ओवरलोड भरकर सड़को के माध्यम से परिवहन किया जा रहा है। जहां वाहनो की रफ्तार तीव्र गति होने से रेत सड़को पर बिखर जाता है। सड़को पर बिखरे पड़े रहे की वजह से आए दिन दुर्घटनाओ का आशंका बना रहता है। इन वाहनो की वजह से कई

सड़कें जगह-जगह धंस गई हैं। सड़कें समय से पहले ही उखड़ रही हैं। लोगों का आनाजाना मुश्किल हो गया है। इन बेखौफ होकर दौड़ रहे वाहनो की वजह से आए दिन दुर्घटनाएं भी हो रही है लेकिन इस ओर खनिज विभाग एवं पुलिस प्रशासन कार्रवाही करने से कतरा रहा है। कभी-कभार दिखावे के तौर पर कार्रवाही करके खूब वाहवाही लूटते है।

वाहन चालको के हौसले बुलंद

सड़कों पर सुबह से देर रात तक ओवरलोड रेत भरकर हाईवा वाहन सड़कों पर दौड़ते नजर आते हैं। मोटी कमाई के फेर में वाहन मालिकों को यातायात नियमों का ध्यान ही नहीं रहता। ऐसे में वाहन मालिक व चालकों के हौसले बुलंद हैं। इन वाहनों के चालकों को यातायात नियमों से कोई सरोकार नहीं रहता और वे जब चाहे तब मनमाने ढंग से गंतव्य की ओर रवाना हो जाते हैं।

शहर लेकर ग्रामीण तक की सड़कें जर्जर

शहर से लेकर ग्रामीण अंचलो की सड़को पर ओवरलोड रेत लेकर दौड़ रहे वाहनो की वजह से के सड़के भी खराब होने लगी है। मार्ग में ओवरलोड वाहन के कारण राहगीरों को लगातार खतरा बना रहता है। शहर की सड़कों पर भी क्षमता से अधिक भार वाले वाहन ही ले जाए जा रहे हैं। शहर की सड़कों पर क्षमता से ज्यादा लोड लेकर वाहन बेखौफ होकर दौड़ रहे हैं। जिससे सड़कें बुरी तरह से टूट रही हैं। सड़कों पर गड्ढा हो रहा है। लेकिन इस ओर प्रशासन की नजरें इनायत नही हो रही है।

कारवाही करने जिम्मेदार नही दिखा रहे रुचि

सड़को पर बेखौफ होकर दौड़ रहे ओवरलोड रेत वाहनो के मालिक से मोटी रकम वसूल रही है। जिसके चलते ओवरलोड दौड़ रहे हाईवा वाहनो के चालक बेखौफ होकर थाना के सामने से हाईवा लेकर गुजरते है। लेकिन विभागीय अधिकारी द्वारा कोई कार्रवाही नही की जाती है,क्योंकि इसके बदले मोटी रकम पहुंचायी जा रही है।

क्षमता से ज्यादा हो रहा परिवहन

सड़को पर तेज रफ्तार में दौड़ रहे हाईवा वाहनो की वजह से राहगिरो को सड़को पर चलने के लिए काफी कठिनाईयों से गुजरना पड़ता है। लेकिन परिवहन करने वाले वाहन नियम कायदों की धज्जियां उड़ाते हुए क्षमता से डेढ़ दो गुना ज्यादा भार लेकर जा रहे है। इन ओवरलोड वाहन के कारण ग्रामीणों व राहगीरों को खासी परेशानी हो रही है।

सिंगरौली की बेटी खुशबू ने जीता देश के लिए दो कांस्य पदक, हुआ भव्य स्वागत

सिंगरौली। भारतीय टीम के साथ जैसे ही वुशु खिलाड़ी खुशबू साकेत मास्को से दिल्ली एयरपोर्ट पहुंची। दिल्ली एयरपोर्ट में वुशु एसोसिएशन ऑफ इंडिया के सीईओ सुहेल अहमद एवं ऑफिशियल टीम ने भव्य रूप से भारतीय खिलाड़ियों का स्वागत किया एवं ऐतिहासिक उपलब्धि पर बधाई दी। रशिया के मास्को में आयोजित मास्को स्टार इंटरनेशनल वुशु चैंपियनशिप में सिंगरौली की बेटी खुशबू साकेत ने अलग-अलग इवेंट में 2 कांस्य पदक पर कब्जा जमा कर ऐतिहासिक सफलता अर्जित करते हुए अपने देश के नाम दो पदक कर इतिहास रच दिया है। यह गौरव मध्य प्रदेश का ही नहीं पूरे देश का है। विगत दिनों देहरादून में 2 मई से 6 मई तक ट्रायल में हिस्सा लेने के बाद उनका चयन रशिया मास्को के लिए हुआ। 31 मई को दिल्ली से रशिया मास्को के लिए उड़ान भरी जहां 1 जून से 7 जून तक आयोजित प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। चैंपियनशिप में ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए देश के नाम दो कांस्य पदक किया। वर्तमान में खुशबू साकेत भारतीय वुशु दल की प्रशिक्षक एवं विश्वामित्र अवार्डी सारिका गुप्ता की विशेष तकनीकी देखरेख में गणेश सिंह विशाल के सानिध्य में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है।

सीधी-सिंगरौली के सांसद द्वारा फैलाया गया झूठा अफवाह : राजेश

सिंगरौली। आम आदमी पार्टी सिंगरौली के पूर्व जिलाध्यक्ष राजेश सोनी ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा की सीधी सिंगरौली क्षेत्र के सांसद राजेश मिश्रा एवं मध्यप्रदेश के डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल के द्वारा कर्नाटक रेलवे इंजन ट्रायल को जिस तरह से अपने ट्वीटर हैंडल से वीडियो जारी करते हुए बताया कि ललितपुर सिंगरौली का रेलवे ट्रायल पूरा हुआ। जबकि दो दिन बाद ही रेलवे ने बयान जारी करते हुए बताया कि ये ट्रायल कर्नाटक में हुआ था। इससे यह साबित होता है कि सीधी सिंगरौली के सांसद कही न कही अन्य राज्यों

का काम भी अपने लोकसभा क्षेत्र का बताना चाहते हैं या तो सांसद को लोकसभा क्षेत्र की जमीनी हकीकत मालूम नही है। सांसद को इस तरह से जनता को गुमराह करना एवं जनता को गलत अफवाह की जानकारी देना लोकसभा क्षेत्र की जनता के भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने का प्रयास है। क्षेत्र की जनता को सांसद और डिप्टी सीएम से ऐसी उम्मीद नही थी और जनता को लगा कि लोकसभा क्षेत्र में एक बड़े काम की सफलता मिल चुकी और बाद में पता चलता है कि वीडियो ही अफवाह है। सीधी सिंगरौली क्षेत्र के सांसद को क्षेत्र की जनता से सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए और जनता उनको जिन कामों के लिए वोट दे कर विजयी घोषित की है उन कामों पर ध्यान देना चाहिए। क्षेत्र की जमीनी हकीकत जो है वही बताना चाहिए ताकि जनता का भरोसा सांसद जैसे पद पर बनी रहे।

एसपी कार्यालय में जनसुनवाई आयोजित

सिंगरौली। पुलिस अधीक्षक मनीष खत्री द्वारा पुलिस अधीक्षक कार्यालय में जनसुनवाई आयोजित की गई। इस जनसुनवाई में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अभिषेक रंजन, नगर पुलिस अधीक्षक पीएस परस्ते, थाना प्रभारी विंध्यनगर अर्चना दिवेदी, थाना प्रभारी नवानगर ज्ञानेन्द्र सिंह, महिला थाना प्रभारी प्रिंयका शर्मा सहित पुलिस अधीक्षक कार्यालय के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। जनसुनवाई के दौरान विभिन्न थाना क्षेत्रों से आए आवेदकों ने अपनी

शिकायतें प्रस्तुत कीं। पुलिस अधीक्षक द्वारा प्रत्येक फरियादी से सीधे संवाद कर उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना। कई शिकायतों का मौके पर ही निराकरण किया गया जबकि शेष प्रकरणों में वैधानिक कार्यवाही सुनिश्चित करने के लिए राजपत्रित अधिकारी पुलिस थाना प्रभारियों एवं चौकी प्रभारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए।

110 लीटर शराब के साथ आरोपी गिरफ्तार

सासन चौकी पुलिस ने की कार्यवाही

सिंगरौली। सासन चौकी पुलिस ने गड़हरा से 109.92 लीटर कीमती 83024 रुपए पकड़ कर आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से ग्रैंड विटारा कार भी जब्त किया है। यह कारवाही एसपी के निर्देश पर सासन चौकी प्रभारी संदीप नामदेव ने की है।

चौकी प्रभारी श्री नामदेव ने जानकारी देते हुए बताया कि मुखबिर से सूचना मिली की संदीप कुमार गुप्ता अपने वाहन से शराब की तस्करी कर रहा है। मुखबिर की सूचना पर चौकी प्रभारी ने तत्काल एक पुलिस टीम गठित किया। जहां गठित टीम ने

मौके पर पहुंचकर शराब कारोबारी संदीप कुमार गुप्ता निवासी सितूल खुर्द को अवैध शराब परिवहन करते हुए ग्राम गड़हरा से पकड़ा। जहां कब्जे से 12 पेटी अंग्रेजी शराब,जिसमें 8 पेटी गोवी कंपनी की बिस्की,दो पेटी मैकड्रारावल,एक पेटी इम्पीरियल ब्लू,एक पेटी बियर कुल 109.92 लीटर शराब जब्त करते हुए ग्रैंड विटारा कार को जब्त कर आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही किया है। कार्यवाही में सउनि लेखचंद डोहर ,विजय अग्निहोत्री ,प्रआर संतोष साकेत,आर. राजकुमार, जितेन्द्र व अनिल सिंह व मुनेन्द्र मिश्रा की भूमिका रही।

रैपुरा तहसीलदार को रिश्वत लेते हुए लोकायुक्त पुलिस ने रंगे हाथों किया गिरफ्तार गिरफ्तार

पन्ना। सागर लोकायुक्त पुलिस की टीम ने बड़ी कार्रवाई करते हुए रैपुरा तहसीलदार चंद्रमणि सोनी को रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ा है। तहसीलदार पर दमोह जिले के पटेरा तहसील के ग्राम गाता निवासी द्रोपदी बाई और कल्याण सिंह लोधी से धारा 250 की कार्यवाही के आदेश को तामील कराने के एवज में रिश्वत ली है जानकारी के अनुसार, द्रोपदी बाई पिता रामनाथ लोधी निवासी पिपरिया कला और कल्याण सिंह अपने धारा 250 की कार्यवाही के आदेश को तामील कराने तहसील कार्यालय पहुंचे थे। इस दौरान तहसीलदार ने पहले उन्हें बाबुओं से बात करने की बात कही, जिसके बाद तहसीलदार के ड्राइवर के माध्यम से रिश्वत की मांग की गई।

शुरुआत में दस हजार रुपए की मांग की गई, लेकिन 9 हजार में सौदा तय हुआ। जिस पर किसान द्वारा तहसीलदार के घर पर रिश्वत की राशि देने गया। जैसे ही पैसा दिया गया, लोकायुक्त टीम ने मौके पर छापा मारकर तहसीलदार चंद्रमणि सोनी को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। लोकायुक्त की इस कार्रवाई से तहसील परिसर और स्थानीय प्रशासन में हड़कंप मच गया है। यह कार्रवाई भ्रष्टाचार के खिलाफ जारी मुहिम का हिस्सा है, जिसमें प्रशासनिक अधिकारियों की जवाबदेही तय की जा रही है।

पॉलीटेक्निक महाविद्यालय पन्ना एवं पवई में मनाया जाएगा प्रवेशोत्सव

पन्ना। संचालनालय तकनीकी शिक्षा भोपाल से प्राप्त निर्देशानुसार पॉलीटेक्निक महाविद्यालय पन्ना एवं शासकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय पवई में दिनांक 10 जून से 15 जून 2025 तक प्रथम चरण की काउन्सेलिंग उपरांत आवंटित सीटों पर प्रवेश हेतु प्रवेशोत्सव का आयोजन किया जाएगा । प्रवेशोत्सव की कार्यवाही अंतर्गत संस्था में प्रवेश लेने हेतु आने वाले विद्यार्थियों का तिलक लगा कर स्वागत किया जाएगा । प्रवेश संबंधी कार्यवाही के सुचारु संचालन हेतु शासकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय पन्ना से श्रीमती वर्षा प्रजापति को नोडल अधिकारी बनाया जाकर हरीश पाठक, राकेश द्विवेदी, हरगोविंद कुर्मी, कौशल कोरी, संतोष साहू एवं मती रुचि खरे की टीम गठित की गयी है जो विद्यार्थियों को प्रवेश संबंधी कार्यवाही में आवश्यक सहयोग प्रदान करेगी ।

नगर के प्रमुख त्योहारों को राज्य सूची में शामिल किए जाने को लेकर पवित्र नगर मंच ने मुख्यमंत्री मोहन यादव का जताया आभार

पन्ना। पवित्र नगर मंच द्वारा लगातार पन्ना नगर को धार्मिक तीर्थ स्थल घोषित किए जाने को लेकर प्रयास किया जा रहे हैं तथा हीरो एवं मंदिरों की नगरी को पर्यटन की दृष्टि से आगे बढ़ाने की दिशा में मंच द्वारा तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान तथा वर्तमान मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव को समय-समय पर ज्ञापन दिए गए तथा मुलाकात की गई इस तारतम में मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव द्वारा पन्ना नगर के आस्था के केंद्र भगवान जुगल किशोर जी के जन्मोत्सव जन्माष्टमी एवं भगवान बलदेव जी का जन्म दिवस हल छठ को राज्य सूची में शामिल किए जाने का आदेश प्रसारित किया है जिसको लेकर पवित्र नगर मंच तथा स्थानीय लोगों ने खुशी व्यक्ति की है तथा प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का आभार व्यक्त किया है उक्त घोषणा किए जाने पर पवित्र नगर मंच के संरक्षक लक्ष्मीकांत शर्मा तथा संयोजक कैलाश मोदी एवं अन्य सदस्यों की उपस्थिति में पत्रकारों को जानकारी देते हुए कहां की प्रदेश सरकार द्वारा उक्त प्रमुख त्योहारों को राज्य सूची में शामिल किए जाने पर हमारे जिला में धार्मिक तथा पर्यटन के क्षेत्र की गतिविधियां बढ़ेगी स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा एवं अधिक से अधिक लोग दर्शन करने आएंगे इस दौरान मंच द्वारा पत्रकारों का सम्मान भी किया गया इस अवसर पर अनेक लोग उपस्थित रहे।

पुलिस द्वारा थाना धरमपुर के प्रकरण में 06 वर्ष से फरार स्थाई वारंटी को किया गया गिरफ्तार

पन्ना। पुलिस अधीक्षक पन्ना श्री साई कृष्णा एस. थोटा द्वारा स्थायी वारण्टों की अधिक से अधिक तामीली हेतु पन्ना जिले में विशेष अभियान चलाया जा रहा है । अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक पन्ना के निर्देशानुसार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पन्ना सुश्री वंदना चौहान व जिले के समस्त अनुविभागीय अधिकारियों के मार्गदर्शन में थाना/चौकी स्तर पर थाना/चौकी प्रभारियों के नेतृत्व में पुलिस टीमों का गठन किया गया है । इसी तारतम्य में थाना प्रभारी धरमपुर उनि अनिल सिंह राजपूत को दिनांक 09/06/025 को मुखबिर से सूचना प्राप्त होने पर माननीय द्वितीय अपर सत्र न्यायाधीश महोदय पन्ना के प्रकरण क्रमांक 03/19 धारा 25/27 आर्म्स एक्ट 11/13 म.प्र. डकैती और व्यपहरण प्रभावित क्षेत्र अधिनियम में 06 वर्ष से फरार स्थाई वारंटी रामजस यादव पिता विजय यादव निवासी दोहा थाना बाँदा देहात जिला- बाँदा (उ.प्र.) को पुलिस के द्वारा मुखबिर सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया है ।

उक्त संपूर्ण कार्यवाही में थाना प्रभारी धरमपुर उनि अनिल सिंह राजपूत, चौकी प्रभारी खोरा सउनि प्रीतम सिंह, प्र.आर. अशोक, आर. बृजेश, अजीत एवं अमित का सराहनीय योगदान रहा है ।

बिना मुआवजा दिए गरीबों के मकान तोड़ने को लेकर कांग्रेस पार्टी ने किया विरोध, सौपा ज्ञापन

पन्ना। पन्ना जिला प्रशासन द्वारा मन माने ढंग से जुगल किशोर लोक बनाए जाने के नाम पर श्री जुगल किशोर जी मंदिर के आसपास रहने वाले लगभग एक सैकड़ा परिवारों को बेघर किया जा रहा है जिसको लेकर कांग्रेस पार्टी ने विरोध प्रदर्शन करते हुए पीड़ितों के साथ जाकर कलेक्टर के नाम स्थानीय एसडीएम को ज्ञापन सोपा है तथा कहा लोगों के साथ अन्याय बर्दाश्त नहीं किया जाएगा ज्ञापन में उल्लेख किया गया है कि न्याय विभाग योजना अंतर्गत पंचम सिंह चौराहा से बड़ा बाजार चौराहा तक तेरह मीटर सड़क का चौड़ीकरण किया जा रहा है जबकि पूर्व नगर विकास के मास्टर प्लान के अनुसार उक्त सड़क को 9 मी बनाए जाने का प्रस्ताव सर्व सहमति से पास हुआ था सन 2015 में अतिक्रमण हटाया भी गया था फिर से आक्रमण हटाया जाना विधि विरुद्ध है इस क्षेत्र में पुश्तैनी रूप से दो सो वर्ष से लोग रह रहे हैं तथा किसी प्रकार अपने छोटे-छोटे

व्यापार करके परिवार का उदर पोषण कर रहे हैं प्रशासन द्वारा जो नोटिस दिए गए हैं उसमें तत्काल हटाने का उल्लेख किया गया है जबकि नियम अनुसार 15 दिवस का समय देना होता है साथ ही दो सो वर्ष से रह रहे लोगों को मुआवजा देकर व्यवस्थित ढंग से अन्य स्थान पर बसाया जा सकता है जिला कांग्रेस अध्यक्ष शिवाजी सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार द्वारा लगातार गरीबों को परेशान किया जा रहा है उनके मकान दुकान तोड़े जा रहे हैं जबकि रोजगार का वादा करने वाली सरकार रोजगार की दिशा में कोई कार्य नहीं कर रही है उन्होंने आगे कहा कि आम जनता के साथ अन्याय बर्दाश्त नहीं किया जाएगा गरीबों लड़ाई कांग्रेस पार्टी लड़ेगी ज्ञापन के दौरान भारी संख्या में कांग्रेस पार्टी के लोग शामिल रहे जिसमें मुख्य रूप से पूर्व विधायक श्रीकांत दुबे कांग्रेस प्रत्याशी रहे भारत मिलन पांडे मार्तंड देव बुंदेला अक्षय तिवारी दीपक तिवारी वैभव थापक रेहान मोहम्मद जन्मेजय अर्जरिया गोपाल मिश्रा भूपेंद्रसिंह युवक कांग्रेस अध्यक्षस्वतंत्र अवस्थी रियासत खान मुकेश दुबे सौरभ पटेरिया अंकित शर्मा सरदार यादव रंजन यादव कीरत परिवार के लोग तथा भारी संख्या में स्थानीय नागरिक शामिल रहे है।

शराब दुकानों पर मूल्य से अधिक दाम नहीं लिए जाएंगे : मौर्य

पन्ना। पूरे प्रदेश में शराब दुकानों में निर्धारित मूल्य से अधिक मूल्य पर शराब की बिक्री की खबरों और शिकायतों के चलते मध्य प्रदेश के आबकारी आयुक्त अभिजीत अग्रवाल द्वारा शराब दुकानों के बाहर क्यूआर कोड चिपकाएं जा रहे है । जिला आबकारी अधिकारी पन्ना

मुकेश कुमार मौर्य ने बताया कि शराब दुकानों से शासन द्वारा निर्धारित मूल्य से अधिक मूल्य पर शराब विक्रय किए जाने की सूचना विभिन्न माध्यमों से प्राप्त हो रही थी । जिसकी समय समय पर टेस्ट परचेज के द्वारा वृत्त प्रभारियों द्वारा जांच की जा रही थी, साथ ही अधिक मूल्य पर विक्रय पाए जाने पर विभागीय प्रकरण भी कायम किए जा रहे है । इसी संबंध में आबकारी आयुक्त मध्य प्रदेश के निर्देशों के पालन में पूरे पन्ना जिले की सभी शराब दुकानों पर क्यूआर कोड चस्पा किए जा रहे है । शराब के ग्राहक इन क्यूआर कोड को अपने मोबाइल में स्कैन कर आबकारी विभाग के पोर्टल के माध्यम से किसी शराब की बोतल का शासन द्वारा निर्धारित न्यूनतम विक्रय मूल्य और अधिकतम विक्रय मूल्य पता किया जा सकता है ।

आपदा प्रबंधन से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं तत्काल दें : कमिश्नर

कमिश्नर ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से की आपदा प्रबंधन की समीक्षा

सीधी। कमिश्नर कार्यालय में वीडियो कान्फ्रेंसिंग से रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने बाणसागर परियोजना से जुड़े जिलों में बाढ़ की स्थिति में राहत एवं बचाव तैयारियों की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि सभी जिलों के अधिकारी बाढ़ संभावित क्षेत्रों का दौरा करके 25 जून तक राहत एवं बचाव कार्य से जुड़ी तैयारियां पूरी कर लें। बाढ़ की स्थिति में राहत शिविर लगाने के लिये स्थान के चयन से लेकर बचाव दल, राहत के उपकरण, दवाओं, खाद्य सामग्री की आपूर्ति तथा बिजली एवं पानी की व्यवस्था से जुड़ी कार्यवाहियां सुनिश्चित करें। बाढ़ पर नियंत्रण के लिये समय पर सूचनाओं का आदान-प्रदान आवश्यक है। जिला तथा तहसील स्तर पर बाढ़ नियंत्रण केन्द्र स्थापित करके इनमें प्रशिक्षित कर्मचारी तैनात कर दें। सूचनाओं का एक दूसरे को लगातार आदान-प्रदान करते रहें। बांधों से पानी छोड़े जाने अथवा

लगातार वर्षा की स्थिति में सभी जिले सतत संपर्क में रहें। बाढ़ से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं तत्काल दें।

कमिश्नर ने कहा कि बाणसागर बांध की अप स्ट्रीम तथा डाउन स्ट्रीम में बाढ़ संभावित क्षेत्र चिन्हांकित हैं। सभी एसडीएम अपने क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर लें। बाढ़ से बचाव के लिये व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर विभिन्न विभागों के संबंधित अधिकारियों को जोड़ें। इस ग्रुप में गांव के कुछ व्यक्तियों तथा पटवारी, ग्राम पंचायत सचिव, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जैसे मैदानी कर्मचारियों को भी शामिल करें। समय पर सही सूचना मिलने से राहत और बचाव कार्य में आसानी होगी। बाणसागर बांध की डाउन स्ट्रीम में सीधी तथा सिंगरौली जिले के 129 गांव बाढ़ संभावित हैं। आपदा प्रबंधन के लिये संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश पत्र जारी कर दिये गये हैं। इनके अनुरूप कार्यवाही करें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए पर्याप्त दवाएं भण्डारित करा दें।

बैठक में आईजी रीवा रेंज गौरव राजपूत ने कहा कि बाढ़ से बचाव के लिए समय रहते तैयारियां कर ली गई तो कोई परेशानी नहीं होगी। बाणसागर बांध में अधिकतम जल स्तर तक पानी आने से पहले ही उसे नियंत्रित रूप से छोड़ना शुरू कर दें। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम के सदस्यों तथा होमगार्ड्स एवं राहत और बचाव से जुड़े अधिकारियों के मोबाइल नम्बर व्हाट्सएप ग्रुप में अपडेट कर लें। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में नाव के साथ-साथ पर्याप्त संख्या में लाइफ जैकेट भी भण्डारित कराएं। जल संसाधन विभाग, राजस्व विभाग तथा पुलिस विभाग के अधिकारी तत्परता से बाढ़ संबंधी सूचनाओं का आदान-प्रदान करें। सभी कंट्रोल रूम एक दूसरे की सूचनाएं साझा करें।

बैठक में मुख्य अभियंता गंगा कछार अशोक डेहरिया ने बाणसागर बांध के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि बांध के जल भराव क्षेत्र में 79 गांव आंशिक रूप से डूब में आते हैं। इन गांवों में ही बाढ़ की समस्या होती है। बांध के पूरे क्षेत्र को 6 जोन में बांट कर जोनल अधिकारी तैनात कर दिये गये हैं। कटनी जिले के 27 गांव तथा उमरिया जिले के 18 गांव बांध के बैक वाटर से प्रभावित होते हैं। बैठक में लोक निर्माण विभाग को अति वर्षा की स्थिति में जलमग्न होने वाले पुल-पुलियों में संकेतक तथा बैरियर लगाने के निर्देश दिये गये।

बैठक में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, अपर कलेक्टर अंशुमन राज, संयुक्त कलेक्टर एसपी मिश्रा सहित संबंधित विभागीय अधिकारी सम्मिलित हुए।

बाढ़ नियंत्रण कक्ष कन्ट्रोल रूम स्थापित किया गया

अधिकारियों एवं कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई

सीधी। अपर कलेक्टर जिला सीधी द्वारा आदेश जारी कर जिले में बाढ़ नियंत्रण कक्ष कन्ट्रोल रूम कलेक्ट्रेट कार्यालय के भूप्रबंधन में स्थापित किया गया है। उक्त बाढ़ नियंत्रण कक्ष का फोन नम्बर 07822-205789 है। उक्त कन्ट्रोल रूम के प्रभारी अधिकारी मुनीन्द्र प्रसाद तिवारी अधीक्षक भू-अभिलेख सीधी मोबाइल नम्बर 6261055409 एवं उनके सहायक अशोक चौबे आर.आई. मोबाइल नम्बर 7089903046 है। बाढ़ नियंत्रण कक्ष दिनांक 15.06.2025 से 30.09.2025 तक संचालित रहेगा। जारी आदेशानुसार सुबह 06 बजे से दोपहर 12 बजे तक प्रीतम दास साकेत सहायक वर्ग 3 परियोजना प्रशासक कुसमी, राजेश कुमार वर्मा भृत्य कृषि विभाग, रमाकान्त प्रसाद पाण्डेय चौकीदार एवं लवकुश पाण्डेय चौकीदार जल संसाधन विभाग की ड्यूटी लगाई गई है। इसी प्रकार दोपहर 12 बजे से शाम 6 बजे तक रामगरीब जायसवाल सुपरवाइजर, वृजेन्द्र कुमार नागवंशी सुपरवाइजर, रामकरण यादव चौकीदार जल संसाधन विभाग, राम निवास रावत भृत्य अनुसूचित जन जातीय कार्य विभाग की लगाई गई है।

इसी प्रकार शाम 6 बजे से रात्रि 12 बजे तक अभिमन्यु तिवारी सुपरवाइजर जल संसाधन महान परियोजना कुसमी, प्रेम सागर द्विवेदी भृत्य नगर पालिका सीधी, राजेश वर्मा स्थायी कर्मी चौकीदार लो.नि.विभाग सीधी, अबधलाल जायसवाल चौकीदार जल संसाधन विभाग की ड्यूटी लगाई गई है। रात्रि 12 बजे से सुबह 6 बजे तक तीरथ प्रसाद जायसवाल सहा. वर्ग-3 कार्या. परियोजना प्रशासक कुसमी, राममिलन सेन चौकीदार एवं रामलाल वर्मा चौकीदार जल संसाधन विभाग, धनेन्द्र द्विवेदी भृत्य कार्या. परि. प्रशासक कुसमी की ड्यूटी लगाई गई है।

संकट मोचन दैनिक लिपिक कार्या. जनजातीय कार्य विभाग, रामपाल द्विवेदी चौकीदार जल संसाधन महान परियोजना कुसमी, विद्याधर द्विवेदी चौकीदार जल संसाधन महान परियोजना कुसमी, रमेश कुमार केवट चौकीदार जल संसाधन विभाग को रिजर्व के रूप में ड्यूटी लगाई गई है।

जवाहर नवोदय विद्यालय चुरहट में कक्षा 6वीं में आवेदन की अंतिम तिथि 29 जुलाई

सीधी। प्रभारी प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय चुरहट, जिला-सीधी के कक्षा 6वीं में सत्र 2026-27 में प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 29.07.2025 है। अभ्यर्थी का जन्म दिनांक 01.05.2014 से 31.07.2016 के बीच होना चाहिए, अभ्यर्थी सीधी जिले का निवासी होना चाहिए एवं सीधी जिले में ही 5वीं में अध्ययनरत होना चाहिए, पात्रता पूर्ण करने वाले अधिक से अधिक अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन करें।

जनसुनवाई में कलेक्टर ने सुनी 171 आवेदकों की समस्याएं, निराकरण के दिए निर्देश

सीधी। नागरिकों के समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिये शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक मंगलवार को जिला पंचायत सभागार में सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक जनसुनवाई आयोजित की जाती है। इस बार आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा जिले के विभिन्न अंचलों से आए 171 आवेदकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर शिकायत की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की गई तथा उसके निराकरण के लिए निर्देश दिए गए। अनिराकृत आवेदनों के लिये समय-सीमा निर्धारित कर अधिकारियों को समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए गए हैं।

जनसुनवाई में संयुक्त कलेक्टर एसपी मिश्रा सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहे। आज आयोजित जनसुनवाई में समस्त उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जिला स्तरीय जनसुनवाई से जुड़े रहे।

शासकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चुरहट में प्रवेश के लिए बैटरी टेस्ट 16 जून को

सीधी। प्राचार्य शास.आदर्श उ.मा.वि. चुरहट जिला सीधी ने जानकारी देकर बताया है कि शिक्षण सत्र- 2025-26 हेतु रिक्त सीट के विरूद्ध विभाग के निर्देश अनुसार दिनांक 16.06.2025 को केवल अनुसूचित जनजाति संवर्ग छात्रों के प्रवेश हेतु शारीरिक मापदंड एवं बैटरी टेस्ट द्वारा चयन किया जाना है। छात्र आयु वर्ग 11 से 14 मिनी, 14 से 16 जूनियर एवं 16 से 18 वर्ष सीनियर वर्ग के छात्र चयन प्रक्रिया में बैटरी टेस्ट के साथ 100 मी. दौड़, लम्बी तथा ऊँची कूद एवं गोला फेक कराया जाना है। उन्होने बताया कि छात्र 16.06.2025 को प्रात: 9 बजे शासकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चुरहट जिला-सीधी में उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

स्व सहायता समूह सदस्यों को दी गई सुरक्षा बीमा योजना एवं लखपति आवर्ती योजना की जानकारी

सीधी। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी तथा मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज के निर्देशन में आजीविका मिशन के जिला परियोजना प्रबंधक पुष्पेन्द्र सिंह एवं मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक के क्षेत्रीय अधिकारी आशीष पाण्डेय के मार्गदर्शन में मझौली सामुदायिक प्रशिक्षण केंद्र में स्व सहायता समूह की महिलाओं को बैंक से संबंधित विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्रदान करने का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रमुख प्रशिक्षक के रूप में रजत सिंह तिवारी शाखा प्रबंधक मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक मड़वास के द्वारा सभी महिलाओं को व्यवस्थित रूप से सुरक्षा बीमा योजना, जीवन ज्योति

बीमा योजना एवं लखपति आवर्ती योजना के साथ-साथ स्व सहायता समूह को अपनी आय किस प्रकार से बढ़ाई जा सके है, उसकी जानकारी प्रदान की गई। स्व सहायता समूह के अलावा बैंक के द्वारा अन्य योजना से कौन सी राशि लोगों को अपने जीवन में सुधार लाने के लिए एवं लखपति दीदी बनने के लिए दी जा सकती है, क्या-क्या डॉक्यूमेंट लगेंगे, उसकी क्या प्रक्रिया है, उसको व्यवस्थित रूप से मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक के मैनेजर के द्वारा समझाया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिला प्रबंधक आजीविका मिशन अजय सिंह, युवा सलाहकार हरिराम त्रिपाठी, कुसमी विकासखंड प्रबंधक सुरजीत सिंह, सहायक विकासखंड प्रबंधक भरत सोनी, आजीविका मिशन के विकासखंड मझौली के प्रबंधक चंद्रकांत सिंह उपस्थित रहे। चंद्रकांत सिंह के द्वारा संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया गया। कार्यक्रम में व्यवस्थित रूप से बैंक से संबंधित आने वाली समस्याओं का समाधान भी किया गया। कोई भी समस्या बैंक संबंधी हो सीधे शाखा प्रबंधक से संपर्क करें किसी अन्य व्यक्ति को किसी तरह से अपनी ओटीपी ना दे। बिना जानकारी के एवं बैंक से राशि निकालते वक्त क्या-क्या सावधानी रखें इस संबंध में भी जानकारी प्रदान की गई।

विद्युत आपूर्ति रहेगी बाधित

सीधी। अधीक्षण अभियंता (संचा-संघा) म.प्र.पू. क्षे.वि.वि. कं.लिमि. सीधी ने जानकारी देकर बताया है कि 132 के.व्ही. सीधी-मऊगंज लाइन में पश्चिम मध्य रेलवे द्वारा निर्माणाधीन रीवा-सीधी-सिंगरौली ब्राडगेज रेलवे लाईन के कारण उस क्षेत्र से गुजर रही लाईन का निर्माण एवं विस्थापन का कार्य ग्राम मधुरी में होने के कारण 33/11 के.व्ही कुर्वाह फीडर, 33 के.व्ही. सीधी (ग्रामीण) विद्युत वितरण केन्द्र अंतर्गत 33/11 के.व्ही की विद्युत आपूर्ति दिनांक 11.06.2025 को समय सुबह 08 बजे से शाम 05 बजे तक बाधित रहेगी। इसी प्रकार 132/33 के.व्ही., 50 एम.व्ही.ए टाल जेमर 132 के.व्ही. सबस्टेशन मड़वास में दिनांक 12.06.2025 को समय सुबह 08 बजे से शाम 06 बजे तक एवं दिनांक 13.06.2025 को समय सुबह 09 बजे से 10 बजे एयर रिलीज कार्य किया जाना प्रस्तावित है। जिसके कारण 33 के.व्ही. कमचढ़ 33 के.व्ही. कुसमी एवं 33 के.व्ही. मड़वास उपकेन्द्र से संबंधित समस्त ग्रामों की विद्युत आपूर्ति बन्द बाधित रहेगी।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने किया ईवीएम वेयरहाउस का निरीक्षण

सीधी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा ईवीएम वेयरहाउस का त्रैमासिक निरीक्षण मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि के रूप में भाजपा से श्री अमित प्रधान, सीपीएम से श्री सुंदर सिंह, उप जिला निर्वाचन अधिकारी एवं संयुक्त कलेक्टर श्री नीलेश शर्मा सहित संबंधित अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

जल गंगा संवर्धन अभियान का आयोजन

सीधी। जल ही जीवन है, यह हम सब जानते है। यह सत्य है कि जल के बिना हम धरती अथवा किसी भी अन्य ग्रह पर जीवन की परिकल्पना नही कर सकते है। संसार के प्रत्येक प्राणी के जीवन का आधार जल ही है। धरती पर कोई ऐसा कोई प्राणी नही है जिसे जल की आवश्यकता न हो। जल जीवन के लिए नितांत आवश्यक है। जल संरक्षण एवं जल संवर्धन को विशेष महत्व देने के लिए मुख्यमंत्री

द्वारा 30 मार्च 2025 को पवित्र क्षिप्रा नदी के तट से जल गंगा संवर्धन अभियान का भव्य शुभारंभ किया गया। जल गंगा संवर्धन अभियान का मुख्य उद्देश्य राज्य की जल संरचनाओं, नदियाँ, तालाब, कुएँ, बावड़ियाँ आदि का संरक्षण एवं पुनरुद्धार करना है। अपर मुख्य सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग मध्यप्रदेश शासन भोपाल के निर्देशानुसार कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सीधी के द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज जनपद पंचायत कुसमी की ग्राम पंचायत केशलार,जनपद पंचायत मझोली की ग्राम पंचायत महखोर, जनपद पंचायत सीधी की ग्राम पंचायत रामगढ़ नं.1 तथा जनपद पंचायत सिहावल की ग्राम पंचायत समरदह एवं महुआर में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंर्तगत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके अंर्तगत पूर्व से निर्मित जल संरचनाओं के संरक्षण तथा संवर्धन के कार्य कराये गये साथ ही नवीन जल संरचनाओं के निर्माण हेतु आवश्यक कार्यवाही की गई।

देश की कृषि और किसानों को सम्पन्न बनाने का अभियान है : सांसद

कृषि वैज्ञानिकों ने नवीन तकनीकी के संबंध में किसानों से की सार्थक चर्चा

सीधी। सांसद डॉ राजेश मिश्रा के मुख्य आतिथ्य में जिले के ग्राम पंचायत गांधीग्राम में विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों ने किसान भाइयों के साथ कृषि के क्षेत्र में नवीन तकनीकी के संबंध में सार्थक चर्चा की।

सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मंशानुरूप कृषकों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा संवाद के माध्यम से देश के कृषि और किसान को सम्पन्न बनाने यह अभियान चलाया जा रहा है। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नेतृत्व में यह अभियान निश्चित तौर पर किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है। स्थानीय कृषि-जलवायु, मृदा की गुणवत्ता, पोषक तत्वों की स्थिति, बीज चयन,

उर्वरक उपयोग और कीट प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर किसानों को वैज्ञानिक सलाह देते रहे तथा किसानों की समस्याओं को समझकर समाधान की दिशा में कार्य करें। सांसद ने कहा कि किसान हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। किसान खुशहाल होंगे तभी देश की असली तरक्की होगी। विकसित कृषि संकल्प अभियान का उद्देश्य कृषकों को नवविकसित फसल किस्मों एवं कृषि तकनीकों की जानकारी, फसल विविधीकरण को प्रोत्साहन, मृदा स्वास्थ्य पत्रक की अनुशंसाओं के आधार पर रसायनिक उर्वरकों के संतुलित तथा वैकल्पिक उपयोग के संबंध में जागरूक करे। इसके साथ ही कृषकों से प्रत्यक्ष संवाद कर उनकी समस्याओं एवं कृषकों द्वारा किये जा रहे नवाचारों का संकलन करते हुए अनुसंधान की कार्यनीति का निर्धारण करे। सांसद ने बैगा जनजातीय तथा अन्य जनजातीय परिवारों के विकास के लिए विशेष पहल करने को कहा है। सांसद ने कहा कि इन परिवारों को शासन की सभी योजनाओं का लाभ दें। उन्हे जैविक कृषि के लिए प्रोत्साहित करें। अरहर, उड़द, दलहन के बीज बैगा परिवारों को प्राथमिकता पर दें। पशुपालन विभाग बैगा परिवारों को पशुपालन सु जुड़ी योजनाओं का लाभ प्राथमिकता पर दें।

इस दौरान ड्रोन तथा नैनो यूरिया ,नैनो डी ए पी का जीवंत प्रदर्शन का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर देवकुमार सिंह चौहान, उप संचालक कृषि संजय श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ ए श्रीवास्तव, कृषि विज्ञान केंद्र सीधी, डॉ अलका सिंह, सहायक संचालक मछली पालन, पशुपालन, उद्यानिकी विभाग, महिला बल विकास, राजस्व, सहित विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

SELECTION OF AGENCY FOR ESTABLISHING, OPERATING AND MAINTAINING DISTRICT NODAL CALL CENTRE, DISTRICT Sidhi

Notice Inviting Tender (NIT)

Office of DeGS District Sidhi
Department of Public Service Management
Pin Code – 486661

Bid No: - 1142/DeGS/2025 Date: 06/06/2025

Request for Proposal (RFP) for "Selection of Agency for Establishing, Operating and MaintainingDISTRICT NODAL CALL CENTRE at Office of DeGS, District Sidhi Online Tenders are invited from reputed Agencies based in India for providing manpower with ITequipment mentioned in this RFP for Establishing, Operating and Maintaining DISTRICT NODAL CALL CENTRE for Office of DeGS, District Sidhi The bids will be received up to the date & time indicated below. The online tenders will be opened in the office of the undersigned as mentioned timeschedule (key date).

Tender Specification No	Name of the Work/Services	Tender Fees (In INR)	EMD (In INR)	Performance Bank guarantee (PBG)	Due date of opening of tender online from 12:00 Hrs.*
	Selection of Agency for Establishing, Operating and Maintaining DISTRICT NODAL CALLCENTRE at Office of DeGS, District Sidhi	500/-	50,000/-	03% of the overall contract value	04-07-2025

* For updated / extended due dates for opening of tender please refer to the key dates. The Client reserves the right to reject any or all the tenders or accept any tender in full or part as considered advantageous to the Client, whether it is lowest or not, without assigning any reason whatsoever it may be.

Additional Collector
Office of DeGS District sidhi
Department of Public Service Management
Pin Code - 488661

G-14141/25

संपादकीय

देर आए, दुरुस्त आए

कनाडा को आखिरकार जी7 सम्मेलन के लिए भारत को न्योता देना पड़ा। यह नई दिल्ली के बढ़ते वैश्विक कद को दिखाता है। भारत को साथ लिए बिना दुनिया के सबसे ताकतवर और अमीर देशों के लिए भी अपने अजेंडे पर आगे बढ़ना मुश्किल होगा। कनाडा के पीएम मार्क कार्नी पर खालिस्तान समर्थक संगठनों का बेहद दबाव था कि उसकी अध्यक्षता में होने वाले जी7 सम्मेलन में भारत को आमंत्रित न किया जाए। कार्नी सरकार ने शुरुआत में अलगाववादियों की मांग के सामने लगभग हथियार डाल ही दिए थे, लेकिन उनके बयान से जाहिर है कि मंच के बाकी सदस्य देश भारत की भागीदारी चाहते थे और इसके चलते कनाडा को झुकना पड़ा। उस पर यह प्रेशर भी होगा कि मेजबान होने के नाते अगर सम्मेलन सफल नहीं रहता है, तो जवाबदेही उस पर आएगी। कार्नी ने खुद स्वीकार किया है कि एनर्जी, एआईअहम खनिजों जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने के लिए सबसे प्रभावशाली देशों को आमंत्रित करना जरूरी है। दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सबसे बड़ी आबादी होने के नाते भारत का इस सम्मेलन में होना स्वाभाविक है। यह नई दिल्ली नहीं, इस मंच और बाकी दुनिया के हित में है कि भारत इसका हिस्सा बने। कनाडा ने आखिरी वक्त पर भारत को आमंत्रित किया, वह भी इस मुद्दे पर उठे विवाद के बाद। इसके बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे स्वीकार किया और कार्नी को उनकी चुनावी जीत पर बधाई दी। यह भारत के जिम्मेदारी भाव और बड़प्पन को दर्शाता है कि कूटनीतिक तकाजों से अलग उसने हालात के मुताबिक फैसला लिया। पीएम मोदी ने अपने मेसेज में कहा है कि भारत और कनाडा आपसी सम्मान व साझा हितों के मार्गदर्शन में मिलकर काम करेंगे। इसके मायने हैं कि भारत पिछली कड़वाहट को भुलाकर कनाडा के साथ संबंध सुधारने को तैयार है, लेकिन क्या कार्नी सरकार भी तैयार है? इसके लिए उसे अपने यहां मौजूद कट्टरपंथी और अलगाववादी तत्वों के प्रेशर से बाहर निकलना होगा। भारत को बुलाना भले कनाडा की मजबूरी रही हो, लेकिन अब उसके पास इस अवसर का फायदा उठाने और अपनी गलती सुधारने का मौका है।

भारतीय परंपरा में ग्यारह की संख्या शुभ मानी जाती है। पारिवारिक और धार्मिक समारोहों में शगुन के रूप में ग्यारह रूपए की भेंट देने की परंपरा इसी वजह से रही है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल को शगुन काल भी कह सकते हैं। ग्यारह साल का वक्त कम नहीं होता। इस दौरान पीढ़ी भी बदल जाती है। ऐसे में इस पूरे दौर का जो मूल्यांकन होगा, उसे पीढ़ीगत नजरिए से भी देखना होगा, क्योंकि हर नई पीढ़ी का नजरिया बुजुर्गों से अलग होता है। इन अर्थों में देखेंगे तो प्रधानमंत्री मोदी और उनका कार्यकाल अनूठा लगेगा। मोदी और उनकी कार्यशैली पुरानी पीढ़ी को भी पसंद हैं और नई पीढ़ी के तो प्रेरक हैं ही।

मोदी सरकार की उपलब्धियों के ग्यारह साल

(उमेश चतुर्वेदी)

मोदी के कार्यकाल की कई उपलब्धियां हैं। मोटे तौर पर सबसे बड़ा जो बदलाव दिखता है, वह है कि इस पूरी अवधि में देश में कोई बड़ा भ्रष्टाचार नहीं दिखा। ऐसा नहीं कि सरकारी तंत्र से भ्रष्टाचार पूरी तरह खत्म हो गया है।

भारतीय परंपरा में ग्यारह की संख्या शुभ मानी जाती है। पारिवारिक और धार्मिक समारोहों में शगुन के रूप में ग्यारह रूपए की भेंट देने की परंपरा इसी वजह से रही है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल को शगुन काल भी कह सकते हैं। ग्यारह साल का वक्त कम नहीं होता। इस दौरान पीढ़ी भी बदल जाती है। ऐसे में इस पूरे दौर का जो मूल्यांकन होगा, उसे पीढ़ीगत नजरिए से भी देखना होगा, क्योंकि हर नई पीढ़ी का नजरिया बुजुर्गों से अलग होता है। इन अर्थों में देखेंगे तो प्रधानमंत्री मोदी और उनका कार्यकाल अनूठा लगेगा। मोदी और उनकी कार्यशैली पुरानी पीढ़ी को भी पसंद हैं और नई पीढ़ी के तो प्रेरक हैं ही। इसकी वजह है, उनकी अद्भुत संप्रेषण कला, जिसके जरिए वे सीधे लोगों के दिलों से जुड़ जाते हैं।

नेहरू और इंदिरा के कार्यकाल के बाद लंबा कार्यकाल वाले प्रधानमंत्री की सूची में मोदी पहुंच चुके हैं। किसने सोचा था कि 1984 में महज दो लोकसभा सीटों तक सिमटने वाली भारतीय जनता पार्टी कभी लगातार तीन संसदीय चुनावों में बाजी मारती रहेगी। इसमें शक नहीं कि यह उपलब्धि भारतीय जनता पार्टी को मोदी के नेतृत्व से ही हासिल हुई है। अगर जनता ने मोदी पर लगातार भरोसा जताया तो इसकी वजह है उनकी कार्यशैली। 2014 की जीत में लोगों की उम्मीदें थीं। इन उम्मीदों की वजह विकास का उनका गुजरात मॉडल रहा। लोगों की उम्मीदों को पूरा करने की उन्होंने जो कोशिश की, 2019 में उसे जनता का भरपूर साथ मिला। उनमें भरोसे की वजह ही थी कि उन्हें और ज्यादा भारी बहुमत से रायसीना की पहाड़ियों के बीच शपथ लेने का मौका मिला। इस कड़ी में देखें तो 2024 में बहुमत से दूर रह जाना खटकता है। लेकिन नहीं भूलना चाहिए कि दस साल के कार्यकाल में आकांक्षाओं का उद्दाम होना स्वाभाविक है और सारी आकांक्षाओं का पूरा कर पाना भी संभव नहीं है। इसलिए कुछ लोग हो सकता है निराश भी रहे हों। जिसका असर चुनाव नतीजों पर दिखा।

मोदी के कार्यकाल की कई उपलब्धियां हैं। मोटे तौर पर सबसे बड़ा जो बदलाव दिखता है, वह है कि इस पूरी अवधि में देश में कोई बड़ा भ्रष्टाचार नहीं दिखा। ऐसा नहीं कि सरकारी तंत्र से भ्रष्टाचार पूरी तरह खत्म हो गया है। जमीनी स्तर पर सरकारी तंत्र की सोच में पारंपरिक भ्रष्टाचारी गंध है। मोदी सरकार के कार्यकार

में यह हुआ है कि भ्रष्टाचारियों पर शिकंजा कसता रहा है। इस शिकंजे से न तो अधिकारी बाहर हैं और न ही राजनेता। तकरीबन पूरे देश में सरकारी तंत्र के कामकाज का अपना तरीका रहा है, उसकी अपनी गति रही है। लेकिन मोदी के नेतृत्व में अब कामकाज का तरीका बदला है। इसे समझने के लिए हाल ही में हुए दुनिया के सबसे ऊंचे पुल के उद्घाटन समारोह को देख सकते हैं। चिनाब पुल के उद्घाटन के वक्त जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि जब इस परियोजना की शुरूआत हुई, तब वे आठवीं में पढ़ रहे थे, अब वे पचपन साल के हैं और अब जाकर यह पूरा हो पाया है। मोदी के ग्यारह साल के शासन में तंत्र का कामकाज का तरीका बदला है। अब वह ज्यादा अनुशासित और लक्ष्यों को वक्त पर पूरा करने को लेकर ज्यादा प्रतिबद्ध हुआ है। नौकरशाही में संजीदापन तो आया है, लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में नौकरशाही पर तंत्र के दूसरे अंगों की बजाय ज्यादा भरोसा बढ़ने की वजह से तटस्थ लोगों की नजर में ब्यूरोक्रेसी कई मामलों में बेलगाम भी हुई है। इसे संयोग ही कहेंगे कि जिस समय मोदी सरकार अपनी ग्यारहीं सालगिरह मनाने जा रही है, उसी वक्त विश्व बैंक की एक रिपोर्ट आई है। इस रिपोर्ट के अनुसार, इस दौरान देश में गरीबों की संख्या 27.1 फीसद से घटकर 5.3 प्रतिशत रह गई है। इससे पहले बीते एक दशक में अत्यधिक गरीबी में जिंदगी गुजार रहे लोगों की दर 2011-12 में जहां 27.1 प्रतिशत रही, वह घट कर 5.3 फीसद रह गई है। यह तब हुआ है,

जब विश्व बैंक ने गरीबी रेखा के लिए तीन डॉलर प्रतिदिन खर्च की सीमा कर दी है, जबकि इसके पहले यह सीमा 2.15 डॉलर प्रतिदिन थी। जाहिर है कि इसके पीछे 81 करोड़ लोगों को मुफ्त अन्न योजना के साथ ही उज्ज्वला, मुद्रा आदि योजनाओं की कामयाबी रही है। मोदी सरकार की कई उपलब्धियां है। देश ने मेडिकल कॉलेजों के मोर्चे पर बड़ी सफलता हासिल की है। साल 2014 में जहां इन कॉलेजों की संख्या 387 थी, वह 2025 में बढ़कर 780 हो गई है। इसी तरह एमबीबीएस की सीटें भी 51,348 से बढ़कर 2024 में 1.18 लाख हो गई हैं। मोदी सरकार के कार्यकाल में बीजेपी के दावे के अनुसार, 17.1 करोड़ नई नौकरियां निकलीं। इस दौरान स्टार्टअप से 1.61 लाख युवाओं को रोजगार मिला। बीजेपी के दावे के अनुसार, सरकार की कौशल विकास मिशन के तहत अब तक 2.27 करोड़ से अधिक युवाओं को ट्रेनिंग मिल चुकी है। उज्ज्वला योजना के तहत अब तक करीब दस करोड़ 28 लाख से ज्यादा गैस कनेक्शन दिए जा चुके हैं। मुद्रा योजना के तहत करीब 52करोड़ ऋण खाते खोले गए हैं, यानी करीब इतने लोगों को कर्ज मिल चुका है। इससे उद्यमशीलता को बढ़ावा मिला है। प्रधानमंत्री आवास, जन-धन और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं ने देश में बदलाव लाने में बड़ी भूमिका निभाई है। देशभर में बारह करोड़ शौचालयों का निर्माण भी मामूली उपलब्धि नहीं है। मोदी सरकार की इन योजनाओं के चलते देश में बदलाव हुआ है। सबसे बड़ा बदलाव डीबीटी यानी सीधे कैश ट्रांसफर की योजनाओं ने ग्रामीण और कमजोर वर्गों तक शासन की योजनाओं की पहुंच बढ़ाई है।

जापान को पछाड़कर भारत हाल ही में दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। इसका भी श्रेय मोदी सरकार को ही जाता है। देश सिर्फ आर्थिक ही नहीं, सांस्कृतिक मोर्चे पर लगातार विकास कर रहा है। इस विकास में परंपरा, आधुनिकता और वैश्विक जुड़ाव का अद्भुत समावेश नजर आता है। मोदी सरकार की ही देन है कि काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, उज्जैन का महाकाल लोक, मां कामाख्या मंदिर, राम मंदिर अयोध्या, केदारनाथ धाम और जूना सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ है। राममंदिर के निर्माण की उपलब्धि ही मोदी सरकार के खाते में जाती है। इसी दौरान उत्तराखंड में चारधाम राजमार्ग परियोजना, हेमकुंड साहिब रोपवे और बौद्ध सर्किट विकास जैसी योजनाएं शुरू हुईं। करतारपुर कॉरिडोर के चलते पाकिस्तान स्थित दरबार साहिब भारतीय सिखों के लिए सुलभ हुआ।

मीडिया की विश्वसनीयता पर उठते सवाल

यह आज के समय में अविश्वसनीय कल्पना ही हो सकती है कि 90 के दशक में एमआर सिंघवी के आकाशवाणी जयपुर पिंकसिटी पेट्रोलपंप के पास स्थित आवास पर मिलनेवाले जरुरतमंद लोगों का जमावड़ा इस तरह से लगा रहता था जैसे किसी राजनेता के निवास पर लगा होता था। पीड़ित व्यक्ति के लिए एमआर सिंघवी एक सहारा रहे हैं। इसका कारण भी यह रहा कि यदि काम जायज है और हितकारक है तो सिंघवी जी आने वाले व्यक्ति के सामने ही संबंधित मंत्री से लेकर अधिकारी को फोन करने में किसी तरह का संकोच नहीं करते थे और आने वाले व्यक्ति की आंखें एहसान से बोझिल हो जाती तो काम भी आसानी से हो जाता था।

(डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा)

आकाशवाणी का यह वह जमाना था जब टेलीप्रिंटर और टेलीफोन ही प्रमुख माध्यम होते थे। सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय से समाचारों की डाक आती थी वहीं प्रादेशिक समाचारों में समूचे प्रदेश के प्रमुख समाचारों का समावेश महत्वपूर्ण होता था।

मीडिया की विश्वसनीयता पर उठते सवालों के बीच आकाशवाणी और बाद में दूरदर्शन के शुरुआती वे दिन बरबस याद आ जाते हैं जब आकाशवाणी के नेशनल और प्रादेशिक समाचारों के प्रति आमजन के विश्वास को इसी से समझा जा सकता है कि चौराहों की चाय-पान की दुकानों पर खड़े होकर भी समाचार सुनने में किसीको कोई संकोच ना होकर गर्व महसूस होता था। आकाशवाणी के नेशनल समाचारों की बात हो तो सुबह 8 बजे और रातः पौने नो बजे के समाचार बुलेटिनों की बेसब्री से प्रतीक्षा होती थी तो प्रातःकालीन प्रादेशिक समाचार के साथ ही खासतौर से सायंकालीन सात बजे के प्रादेशिक समाचार को कोई भी प्रदेषवासी मिस नहीं करना चाहता था। आकाशवाणी और दूरदर्शन का यह स्वर्णकाल इस मायने में कहा जा सकता है कि सरकारी नियंत्रण में होने के बावजूद आमआदमी तो क्या पक्ष और विपक्ष के नेतागण भी समाचारों की विश्वसनीयता पर प्रश्न नहीं उठा पाते थे। होता तो यहां तक था कि आकाशवाणी के कार्यक्रमों से लोग अपनी घड़ियों को मिलाया करते थे।

विश्वसनीयता का यह कोई आसान काम नहीं था पर उस समय के दिग्गज मीडियाकर्मियों ने अपनी मेहनत, लगन और निष्पक्षता से सींचने का काम किया और उसका परिणाम यह रहा कि उस समय के मीडिया दिग्गजों को समूचे समाज में चाहे वह राजनीतिक स्तर हो, ब्यूरोक्रेटिक स्तर हो या फिर आमजन सभी जगह सम्मान से देखा जाता था। यदि प्रादेशिक स्तर की बात की जाए तो आकाशवाणी जयपुर अजमेर के समाचार संपादक और बाद में दूरदर्शन जयपुर केन्द्र के समाचार एकांश के निदेशक मोहनराज सिंघवी जिन्हे मीडिया जगत में एमआर सिंघवी के नाम से जाना जाता रहा है की मेहनत, निष्पक्षता और मीडिया की स्वतंत्रता की पक्षधरता का ही परिणाम रहा कि मीडिया जगत में एमआर सिंघवी एक ब्राण्ड के नाम से पहचान बनाने में कामयाब रहे। पक्ष-विपक्ष के सभी नेता, समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों सहित आमजन में जिस तरह की छवि एमआर सिंघवी की बनी वह आजके मीडिया कर्मियों के लिए ईर्च्छा का कारण बन सकती है तो प्रेरणास्पद भी है। बात में इतना दम की क्या तो मुख्यमंत्री से लेकर मंत्रीमण्डल के सदस्यगण और क्या ब्यूरोक्रेसी के कर्ताधर्ता एमआर सिंघवी की बात को कमतर समझने की भूल भी नहीं कर सकते थे।

यह आज के समय में अविश्वसनीय कल्पना ही हो सकती है कि 90 के दशक में एमआर सिंघवी के आकाशवाणी जयपुर पिंकसिटी पेट्रोलपंप के पास स्थित आवास पर मिलनेवाले जरुरतमंद लोगों का जमावड़ा इस तरह से लगा रहता था जैसे किसी राजनेता के निवास पर लगा होता था। पीड़ित व्यक्ति के लिए एमआर सिंघवी एक सहारा रहे हैं। इसका कारण भी यह रहा कि यदि काम जायज है और हितकारक है तो सिंघवी जी आने वाले व्यक्ति के सामने ही संबंधित मंत्री से लेकर अधिकारी को फोन करने में किसी तरह का संकोच नहीं करते थे और आने वाले व्यक्ति की आंखें एहसान से बोझिल हो जाती तो काम भी आसानी से हो जाता था। खासबात यह कि बिना जानपहचान भी कोई अपने दुखदर्द को लेकर पहुंच जाता था तो सहयोग करने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ते। मैं स्वयं इसका उदाहरण हूं। किसी दिन आकाशवाणी के अनुबंध पर समाचार अनुभाग के लिए लिखित परीक्षा हुई और एक दिन एकाएक घर पर आकाशवाणी से अनुबंध का पत्र आ गया।

वर्ग पहेली 5758

संकेतः बाएं से दाएं

1. ये तिब्बत के राष्ट्राध्यक्ष और आध्यात्मिक गुरू है, यह एक मंगोलियाई पदवी है, जिसमका मतलब होता है ज्ञान का महासागर (5)
6. बराबर, विभाज्य (2)
7. विम्बलडन नाम इस खेल से जुड़ा है (5)
10. द्वार यंत्र, लॉक (2)
11. हस्तलिखित, उपरोपित, पैबंदी (3)
12. सिंह या शेर को यह भी कहते है (4)
14. पेरिस शहर इस नदी के किनारे बसा है, यह नदी इंगलिश चैनल मे जाकर गिरती है (2)
15. क्रम में प्रथम, आदिम (3)
16. हजरत मुहम्मद की छंदोबद्ध स्तुति (2)
17. जननी, मां, मातृ, पैदा करने वाली स्त्री (1)
18. पश्चिमी अफ्रीका के देश घाना की यह राजधानी है (3)
19. अध्ययन (अंग्रेजी)(2)
21. श्रीराम के भाई भरत के ज्येष्ठ पुत्र का यह नाम था (2)
22. पुराणानुसार एक प्रकार के देवता जो कुबेर के सेवक और उसकी निधि के रक्षक कहे गए है (2)
23. धमनी, स्पंद, रग (2)

ऊपर से नीचे

1. दस दिन का आयोजन या कार्यक्रम (6)
2. अलक, जुल्फ (2)
3. प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना की (8)
4. इज्जत, प्रतिष्ठा, आबरू, मापदंड (2)
5. पवन, वायु, हवा (3)
8. तकनीकी संबंधी जानकारी रखने वाला (6)
9. वायु, पवन, बयार (3)
10. बृहस्पति की पत्नी का नाम (2)
13. महिला ईसाई पादरी (2)
16. शरीर का एक संवेदी अंग (2)
18. ऐक्सिस, कीलक, धुरी, मेरू (2)
20. किसी महाविद्यालय का प्रमुख (2)

वर्ग पहेली 5757 का हल

ग्री	रा		फि	रो	जा	बा	द
वा	र	दा	त		न	ग	र
	प	ह	र		की		मा
ह	र	क	त		खै	र	
द	स्त			सू	र	ज	
क		जू	न		म	क	र
र	ख	ना		पा	ना		क्षि
ना	त			क	ना	ग	त

नाई चाचा की दुकान

(डॉ. मुकेश असीमित)

दुकान के ठीक बगल में एक चाय की दुकान थी, जो प्रतीक्षालय का काम करती थी। वहाँ बैठे लोगों के लिए अपनी बारी का इंतजार करते हुए दो-चार कप चाय पीना अनिवार्य जैसा हो जाता था। चाय के खाली कपों पर मंडराती मक्खियाँ, और चाय के दाग अखबारों के टुकड़ों पर अपनी स्मृतियाँ छोड़ जाते। ओपीडी में बैठा, प्लास्टर रूम से एक अधेड़ उम्र की महिला की चीख सुन रहा था। दरअसल उसका प्लास्टर काटा जा रहा था। प्लास्टर कटाई मशीन की धरधाराती आवाज़ और महिला की चीख, दोनों ने माहौल को बेहद डरावना बना रखा था। मैं सोच रहा था कि क्या मेरे जीवन में इससे भी बुरा और डरावना दृश्य हो सकता है। तभी मुझे याद आया कि हां, बिल्कुल है, और शायद उससे भी ज्यादा डरावना अनुभव था बचपन में नाई चाचा के सैलून में हेयर कटिंग का। किसी रामसे ब्रदर्स की डरावनी फिल्म की स्क्रीनिंग से भी डरावना वह दृश्य होता, जब हम लगभग घिसटते हुए पिताजी के हाथों नाई चाचा की दुकान तक पहुंचाए जाते। नाई चाचा की दुकान गाँव के हिसाब से सबसे आकर्षक, रहस्यमयी, डरावनी और रोमांच भरी होती थी। दुकान में एक पुरानी, टूटी-फूटी मेज थी, जिसकी एक टूटी हुई टांग को पत्थरों से संतुलित किया गया था। मेज की लकड़ी की ऊपरी सतह जगह-जगह से उखड़ी हुई थी, और बीच-बीच में निकली कीलें कभी-कभी किसी के कुर्ते में फंसकर अपना अस्तित्व जता देती थीं। वहीं कुछ अखबार के टुकड़े बैठे हुए लोगों के हाथों में उल्टे-सीधे पकड़े होते, और कुछ फर्श पर बिखरे पड़े रहते। फर्श पर कटे हुए बालों के ढेर इधर-उधर फैले होते, नीचे पड़े अखबारों के टुकड़ों के साथ गलबहियां करते हुए।

दुकान के ठीक बगल में एक चाय की दुकान थी, जो प्रतीक्षालय का काम करती थी। वहाँ बैठे लोगों के लिए अपनी बारी का इंतजार करते हुए दो-चार कप चाय पीना अनिवार्य जैसा हो जाता था। चाय के खाली कपों पर मंडराती मक्खियाँ, और चाय के दाग अखबारों के टुकड़ों पर अपनी स्मृतियाँ छोड़ जाते। चाय के कप से चाय खाली होने के साथ ही गाँव वालों द्वारा संग्रहित असीमित परम ज्ञान का आदान-प्रदान भी खाली होता रहता। चर्चाएँ जो गाँव की गलियों, मोहल्लों, चौबारों, अटारियों से होकर, गाँव में आई नई बहू का विश्लेषण, गाँव में किसी युवक की नौकरी का विश्लेषण, पिता-पुत्र की लड़ाई में आज किसका सिर फूटा, ये सब चर्चाएँ... फिर चर्चाएँ गाँव की गलियों से गुजरकर शहर, देश और विदेश तक के रणनीतिक, सामाजिक, आर्थिक हर मुद्दे पर गर्मागर्म बहस। बीच-बीच में, केश विन्यास में व्यस्त नाई चाचा की विशेषज्ञ टिप्पणियाँ माहौल को और जीवंत बना देती थीं।

आज का राशिफल

मेष

आज भाग्य साथ दे रहा है। कार्यक्षेत्र में आपकी नेतृत्व क्षमता और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता सबका ध्यान आकर्षित करेगी। उच्च अधिकारियों से संबंध मजबूत होंगे और यदि आप प्रमोशन या ट्रांसफर की प्रतीक्षा कर रहे हैं तो उसके शुभ संकेत मिल सकते हैं।

वृष

आज दिन शुभ है और आप कारोबार में रणनीतिक बदलाव की योजना बना सकते हैं जो आगे चलकर बड़े लाभ में बदल सकती है। नए प्रॉजेक्ट्स और साझेदारी से जुड़े निर्णय लेने से पहले भलीभांति सोचें। ऑफिस में आपकी कार्यकुशलता की सराहना होगी ।

मिथुन

आज दिन कुछ चुनौतियों से भरा हो सकता है, लेकिन आपकी चतुराई और संवाद कला से कठिन परिस्थितियां भी सुलझ सकती हैं। ऑफिस में सहकर्मियों की ईर्ष्या से थोड़ी परेशानी हो सकती है लेकिन आप शांत रहकर स्थिति को अपने पक्ष में मोड़ पाएंगे।

कर्क

आज लाभ के योग हैं। ऑफिस में आपका आचरण और निर्णय दोनों ही प्रभावी सिद्ध होंगे। उच्च पदस्थ व्यक्तियों से वार्ता सफल हो सकती है जिससे पदोन्नति या परियोजना की मंजूरी मिलेगी।

सिंह

आज लाभ के योग हैं और आपके यात्रा संबंधी खर्चों में वृद्धि हो सकती है, विशेषकर व्यवसायिक यात्राएं। होटल, पर्यटन, इवेंट या मीडिया इंडस्ट्री से जुड़े लोगों के लिए दिन भाग्यशाली है। किसी अधूरे प्रॉजेक्ट को पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करनी होगी। सेल्स टारगेट वाले क्षेत्रों में कार्यरत जातकों को अच्छे नतीजे मिल सकते हैं।

कन्या

आज दिन भागदौड़ और प्रयास का है। सूर्य की स्थिति के कारण सरकारी या प्रशासनिक मामलों में थोड़ी रुकावट आ सकती है, परंतु दिन के अंत में प्रयास सफल होंगे। आपके द्वारा किए गए सौदे भविष्य में बड़े अनुबंध का रूप ले सकते हैं।

तुला

आज दिन मानसिक अशांति और आंतरिक संघर्ष का है। शुक्र की स्थिति के कारण आप आर्थिक रूप से थोड़ा असंतुलित अनुभव कर सकते हैं। विरोधी आपकी छवि को नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं, अतः विवेक और साहस से काम लें। व्यवसाय में किसी पुराने ग्राहक से तनाव हो सकता है।

धनु

आज दिन नई संभावनाओं और संपर्कों से भरपूर रहेगा। यदि आप किसी बड़े क्लाइंट से डील फाइनल करना चाहते हैं तो यह समय अनुकूल है। अतीत में किए गए कार्यों का प्रतिफल मिलेगा युवा उद्यमियों के लिए नेटवर्किंग और एक्सपोजर का दिन है। सामाजिक स्तर पर भी आपकी उपस्थिति मजबूत होगी।

कुंभ

आज जातकों के लिए दिन बड़े अवसरों का है। यदि आप आयात-निर्यात, कंसल्टेंसी या टेक्नोलॉजी आधारित व्यवसाय में हैं, तो बड़ा कदम उठाया जा सकता है। ऑफिस में आपकी निर्णय लेने की क्षमता की प्रशंसा होगी। उच्चाधिकारी आपकी कार्यशैली से प्रसन्न होंगे। आध्यात्मिक रुझान भी बढ़ेगा, जिससे मानसिक स्थिरता मिलेगी।

वृश्चिक

आज मंगलमय समाचार मिलने की संभावना है। व्यापार में तनावपूर्ण स्थितियों से राहत मिलेगी और नई योजना लाभदायक सिद्ध होगी। पुराने कानूनी मामलों या बकाया धन की प्राप्ति से मानसिक शांति मिलेगी। नौकरीपेशा लोगों को ऑफिस में वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

मकर

आज दिन सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों से युक्त रहेगा, जिससे मन को शांति और नए अवसर प्राप्त होंगे। ग्रहों की चाल आपकी आर्थिक उन्नति में सहायक है, विशेषकर यदि आप रियल एस्टेट, फार्मा या ट्रेडिंग से जुड़े हैं। क्रय-विक्रय में लाभ होगा। नौकरीपेशा लोगों के लिए ट्रांसफर या नई पोस्टिंग के योग हैं।

मीन

आज दिन आंतरिक जागरुकता और करियर विस्तार का है। बृहस्पति की स्थिति से शिक्षा, प्रशिक्षण, और गहराई से ज्ञान प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। विवादों का अंत होगा और गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना होगा। किसी भी बड़े आर्थिक सौदे में सावधानी बरतें। खासकर उधार देने से बचें। नौकरी में वरिष्ठों से मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

संक्षिप्त समाचार

तमिलनाडु के प्रसिद्ध मंदिर में मांस खाते पकड़ा गया शख्स, मचा हड़कंप

चेन्नई, एजेंसी। तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई में सोमवार को उस वक्त तनाव फैल गया जब यहां के एक मंदिर में एक शख्स को मांसाहारी भोजन करते हुए पकड़ा गया। शख्स प्रसिद्ध अन्नामलाई मंदिर परिसर में कथित तौर पर चिकन बिरयानी खा रहा था। मामला सामने आने के बाद मंदिर और आस पास के इलाके में तनाव फैल गया। जानकारी के मुताबिक घटना मंदिर के बाहरी प्रांगण क्षेत्र में हुई। मंदिर में मौजूद कुछ लोगों ने शख्स को भोजन करते हुए देखा। इसके बाद लोगों ने मंदिर के अधिकारियों को इसकी सूचना दी। एक अखबार के मुताबिक शख्स से जब पूछताछ की गई तो उसने अजीबोगरीब दावा किया। उसने अधिकारियों को बताया कि उसने वेज बिरयानी का ऑर्डर दिया था, लेकिन गलती से उसके साथ चिकन का एक टुकड़ा पैक हो गया था। हालांकि अधिकारियों ने उसकी दलील नहीं सुनी और इसकी सूचना जिला पुलिस को दी। पुलिस ने शख्स से पूछताछ के लिए उसे हिरासत में ले लिया। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है।

अमरनाथ यात्रा में अब और कड़ी सुरक्षा, पहलगाम में लगाई गई चेहरा पहचानने वाली डिवाइस

नईदिल्ली, एजेंसी। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद सुरक्षा एजेंसियां घाटी में किसी भी तरह की कोई भी चूक नहीं छोड़नी चाहतीं। अमरनाथ यात्रा पर हमेशा से बनी आतंकी हमले की आशंका को देखते हुए जम्मू कश्मीर पुलिस ने तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा के लिए पहलगाम मार्ग पर चेहरा पहचानने वाला सिस्टम लगाया है। एक अधिकारी ने इसके बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इससे यह फायदा होगा कि अगर कोई संदिग्ध व्यक्ति कैमरे की नजर में आता है तो कैमरा सुरक्षा एजेंसियों को तुरंत ही अलर्ट कर देगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक अमरनाथ यात्रा में तीर्थयात्रियों की सुरक्षा को और भी ज्यादा पुख्ता करने के लिए इस सिस्टम को लगाया गया है। इस सिस्टम को और भी ज्यादा सटीक बनाने के लिए इसके अंदर घाटी में एक्टिव और संदिग्ध आतंकवादियों की तस्वीरें डाली गई हैं। अधिकारियों के मुताबिक, जिन आतंकवादियों की तस्वीरे उपलब्ध कराई गई हैं यदि उनसे मेल खाता कोई संग्दिध व्यक्ति कैमरा फ्रेम में आएगा तो सुरक्षा बलों द्वारा संचालित निगरानी केंद्र पर हूटर बजने लगेगा, ताकि खतरे को समाप्त करने के लिए सटीक समय में कदम उठाए जा सकें। एफआरएस डिजिटल फोटोग्राफ या वीडियो से चेहरे की विशेषताओं का विश्लेषण करके तथा डाटाबेस में मिलान ढूंढकर किसी व्यक्ति की पहचान करता है। अधिकारी ने कहा, अमरनाथ यात्रा पहले भी आतंकवादियों के निशाने पर रही है। इस यात्रा के लिए पुख्ता सुरक्षा इंतजाम करना जरूरी हो गया है, क्योंकि हर वर्ष लाखों तीर्थयात्री पवित्र गुफा में दर्शन के लिए आते हैं।इस वर्ष की अमरनाथ यात्रा के लिए तीन लाख से अधिक तीर्थयात्रियों ने पंजीकरण कराया है।

मध्य रेलवे को लोकल ट्रेनों में स्वचालित दरवाजे लगाने चाहिए : शरद पवार

मुंबई, एजेंसी। राकांपा (एसपी) अध्यक्ष शरद पवार ने लोकल ट्रेन से गिरकर यात्रियों की मौत को दुर्भाग्यपूर्ण करार देते हुए सोमवार को मध्य रेलवे प्रशासन से अपील की कि वह भीड़भाड़ को देखते हुए लोकल ट्रेनों में स्वचालित दरवाजे लगाने जैसे उपाय लागू करे। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में सोमवार की सुबह एक चलती ट्रेन से गिरकर कम से कम चार यात्रियों की जान चली गई और छह यात्री घायल हो गए। दुर्घटना दिवा और कोपर रेलवे स्टेशनों के बीच उस वक्त हुई जब यात्रियों से भरी ट्रेन कसारा जा रही थी। भीड़भाड़ वाली दो ट्रेनों के पायदान से लटके यात्रियों और उनके बैग के एक-दूसरे से टकराने के कारण हुई क्योंकि ट्रेनें विपरीत दिशाओं से गुजर रही थीं। पवार ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में लिखा, ''मध्य रेलवे को समयसारणी अच्छी तरह से बनानी चाहिए और उसी के अनुसार महत्वपूर्ण मार्गों पर लोकल ट्रेनों की संख्या बढ़ानी चाहिए। यात्रियों की सुरक्षा के लिए आवश्यक उपाय तुरंत लागू किए जाने चाहिए। ऐसी दुर्घटनाओं को रोकने के लिए लोकल ट्रेनों में स्वचालित दरवाजे लगाने का निर्णय तय समय पर लागू होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा, ''कुछ यात्रियों का अस्पताल में इलाज चल रहा है।' महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्य रेलवे नेटवर्क पर हर दिन औसतन छह से सात यात्रियों की लोकल ट्रेनों से गिरकर मौत हो जाती है।

2034 में होगा 'वन नेशन, वन इलेक्शन'? इस खास योजना पर काम कर रही सरकार

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार ने 'वन नेशन, वन इलेक्शन' की महत्वाकांक्षी योजना को 2034 तक लागू करने का लक्ष्य रखा है। इस योजना के तहत लोकसभा और सभी राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराए जाएंगे। इस पहल का उद्देश्य बार-बार होने वाले चुनावों के कारण होने वाले खर्च को कम करना और शासन में निरंतरता लाना है।

इसके लिए संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024 और केंद्रशासित प्रदेश कानून (संशोधन) विधेयक, 2024 संसद में पेश किए जा चुके हैं। इस बदलाव के तहत, 2029 के आम चुनाव के बाद जो भी राज्य विधानसभाएं चुनी जाएंगी, उनका कार्यकाल कम कर दिया जाएगा, ताकि 2034 के आम चुनावों के साथ उन्हें सिंक्रोनाइज किया जा सके। %वन नेशन, वन इलेक्शन% के इस प्रस्ताव पर बनी संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के अध्यक्ष और राजस्थान के पाली से भाजपा सांसद पी. पी. चौधरी ने टाइम्स ऑफ इंडिया को बताया कि 2027 के बाद जिन राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं, उनका कार्यकाल छोटा रखा जाएगा। उदाहरण के तौर पर, 2032 में उत्तर प्रदेश में संभावित विधानसभा चुनाव सिर्फ दो साल के कार्यकाल के लिए हो सकते हैं, ताकि 2034 के लोकसभा चुनावों के साथ वहां की विधानसभा भी साथ में जाए। क्या कहता है विधेयक? संविधान संशोधन

विधेयक के अनुसार, राष्ट्रपति 2029 के आम चुनावों के बाद लोकसभा की पहली बैठक की तारीख के आधार पर एक अधिसूचना जारी कर सकते हैं, जिसमें अगले आम चुनावों की तारीख तय की जाएगी। इसके बाद चुनी गई सभी राज्य विधानसभाएं उसी लोकसभा के पांच साल की अवधि तक ही सीमित रहेंगी। अगर लोकसभा या कोई राज्य विधानसभा पांच साल पूरे होने से पहले ही भंग हो जाती है, तो नए चुनाव उसी अवधि की बची हुई अवधि के लिए होंगे। इसका उद्देश्य यह है कि अगला चुनाव उसी एकसमान चुनावी चक्र में आ जाए।

विशेष परिस्थितियों में छूट की व्यवस्था : हालांकि, विधेयक में यह भी प्रावधान है कि अगर चुनाव आयोग यह राय देता है कि किसी विशेष राज्य में उस समय चुनाव कराना संभव नहीं है, तो वह इस संबंध में राष्ट्रपति को सिफारिश कर सकता है। इसके बाद राष्ट्रपति उस राज्य के चुनाव को आगे की तारीख में कराने का आदेश दे सकते हैं। राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों का दौरा करेगी समिति जेपीसी अध्यक्ष चौधरी ने यह भी बताया कि समिति के सदस्य अभी तक महाराष्ट्र और उत्तराखंड का दौरा कर चुके हैं। पैनल के अधिकांश सदस्यों में यह सहमति बन चुकी है कि वे सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों का दौरा करेंगे, जिससे अंतिम सिफारिश तैयार की जा सके। इसी कारण से समिति का कार्यकाल आगे बढ़ाया जा सकता है।

ज्ञात हो कि दोनों विधेयकों को दिसंबर 2024 में लोकसभा में पेश किया गया था और इसके बाद उन्हें जेपीसी को सौंपा गया था। समिति इस विषय पर विभिन्न हितधारकों से विस्तृत सलाह-मशविरा कर रही है। क्या है 'वन नेशन, वन इलेक्शन'? 'वन नेशन, वन इलेक्शन' का प्रस्ताव भारत में लोकसभा और सभी राज्य विधानसभाओं के चुनावों को एक साथ आयोजित करने की योजना है। वर्तमान में, भारत में अलग-अलग समय पर केंद्र और विभिन्न राज्यों के लिए चुनाव होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारी वित्तीय और प्रशासनिक बोझ पड़ता है। इस प्रस्ताव के तहत, मतदाता एक ही दिन में केंद्र और राज्य सरकारों के लिए मतदान करेंगे, जिससे चुनावी प्रक्रिया को सरल और लागत प्रभावी बनाया जा सकेगा। कानूनी और संवैधानिक ढांचा इस योजना को लागू करने के लिए संविधान में संशोधन की आवश्यकता होगी। सरकार ने इसके लिए दो विधेयक तैयार किए हैं: संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024 और संघ राज्य क्षेत्र कानून (संशोधन) विधेयक, 2024। इन विधेयकों को 17 दिसंबर 2024 को लोकसभा में पेश किया गया था। इनके तहत नया अनुच्छेद 82 जोड़ा जाएगा, जो यह सुनिश्चित करेगा कि लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ हों। इसके अतिरिक्त, अनुच्छेद 83, 172 और 327 में संशोधन प्रस्तावित हैं। राष्ट्रपति द्वारा लोकसभा के पहले सत्र की तारीख को नियत तारीख के रूप में अधिसूचित किया जाएगा। यह तारीख 2029 में होने वाले लोकसभा चुनाव के बाद निर्धारित की जाएगी, जिसके बाद 2034 में पहली बार एक साथ चुनाव हो सकते हैं। इस योजना की रूपरेखा तैयार करने के लिए 2 सितंबर 2023 को पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक उच्च-स्तरीय समिति का गठन किया गया था।

पारदर्शिता कोई एहसान नहीं, संवैधानिक दायित्व है; चुनाव आयोग पर कांग्रेस का नया हमला

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस ने एक बार फिर निर्वाचन आयोग पर हमला बोलते हुए कहा है कि आयोग की विश्वसनीयता खतरे में है और उसे सभी उठाए गए सवालों का जवाब देना चाहिए, क्योंकि पारदर्शिता कोई एहसान नहीं बल्कि संवैधानिक जिम्मेदारी है। पार्टी ने खासतौर पर महाराष्ट्र और हरियाणा की मतदाता सूचियों को सार्वजनिक करने की मांग की है, ताकि चुनाव प्रक्रिया में भरोसा बना रहे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हाल ही में महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में धांधली के आरोप लगाए थे। इस पर निर्वाचन आयोग ने जवाब दिया है कि 2009, 2014, 2019 और 2024 के चुनावों के लिए मतदाता सूचियां कांग्रेस और अन्य दलों को समय पर दी गई थीं और वे वेबसाइट पर मुफ्त में डाउनलोड के लिए भी उपलब्ध हैं। महाराष्ट्र के मुख्य निर्वाचन कार्यालय ने बताया कि 22 मई को कांग्रेस सांसद के सामने यह स्थिति दोहराई गई थी। राहुल गांधी ने की तारीख की मांग राहुल गांधी ने चुनाव आयोग की इस पहल को पहला अच्छा कदम बताया लेकिन साथ ही यह भी पूछा कि डेटा डिजिटल और मशीन-रीडेबल फॉर्मेट में कब उपलब्ध होगा? उन्होंने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर यह सवाल उठाया। खरगे का बयानः पारदर्शिता जरूरी कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि राहुल गांधी का लेख चुनाव की पारदर्शिता और निष्पक्षता पर गंभीर सवाल उठाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग की ओर से जो जवाबी पत्र सामने आया है, उसकी प्रामाणिकता संदिग्ध है। उन्होंने कहा, पारदर्शिता कोई दया नहीं है, यह संवैधानिक दायित्व है। लोकतंत्र अंधेरे में चलने वाली प्रक्रियाओं और अपुष्ट आंकड़ों पर नहीं चल सकता। कांग्रेस की मांगें 2024 लोकसभा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों की डिजिटल और मशीन-पठनीय मतदाता सूची सार्वजनिक की जाए। चुनाव के दिन शाम 5 बजे के बाद के सभी मतदान केंद्रों की सीसीटीवी फुटेज सार्वजनिक की जाए। पार्टी की विशेष समिति ने बताया कि कांग्रेस नवंबर 2024 से महाराष्ट्र में मतदाता सूचियों में गड़बड़ियों को लेकर चिंतित रही है और इस पर अब तक स्पष्ट जवाब नहीं मिला है।

सबक लिया है, सार्वजनिक सभाओं के लिए एक कानून बना सकते हैं: बेंगलुरू भगदड़ पर शिवकुमार

बेंगलुरु, एजेंसी। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार ने सोमवार को कहा कि राज्य ने हाल की भगदड़ से सबक लिया है और भविष्य में सार्वजनिक सभाओं के प्रबंधन के लिए एक कानून लाने पर विचार किया जा रहा है। दिल्ली नगर निगम के महापौर राजा इकबाल सिंह से एक मुलाकात के बाद शिवकुमार ने संवाददाताओं से कहा, ''इससे सबक सीखने की जरूरत है। हम एक योजना लेकर आएंगे, हमारे पास भविष्य में भीड़ को संभालने के लिए नीतियां हैं। हमें एक कानून बनाना होगा, हम इस पर विचार कर रहे हैं। यह एक सबक है जो हमें सीखना होगा।'' कांग्रेस नीत कर्नाटक सरकार की आलोचना कर रहे विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए शिवकुमार ने कहा, ''वे शवों पर राजनीति कर रहे हैं। मुझे उनके लिए दुख है।'' रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की आईपीएल के फाइनल मुकाबले में पहली जीत का जश्न चार जून को चिन्नास्वामी स्टेडियम में आयोजित किया गया था लेकिन स्टेडियम के बाहर भगदड़ मचने से 11 लोगों की मौत हो गई और 56 से अधिक लोग घायल हो गए। और कर्नाटक में विपक्षी भारतीय जनता पार्टी ने स्थिति को ठीक से नहीं संभालने के लिए कांग्रेस के नेतृत्व वाली राज्य सरकार पर निशाना साधा है।

पहले सबके सामने फटकारा, अब माफी मांग रहे मंत्री जी, लेकिन मानने को तैयार नहीं डॉक्टर

पणजी, एजेंसी। गोवा मेडिकल कॉलेज और अस्पताल (जीएमसीएच) में स्वास्थ्य मंत्री विश्वजीत राणे द्वारा एक वरिष्ठ डॉक्टर को सार्वजनिक रूप से फटकारे जाने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। शनिवार को हुई इस घटना के बाद राणे ने माफी मांगी, लेकिन जीएमसीएच के मुख्य चिकित्सा अधिकारी) डॉ. रुद्रेश कुट्टिकर ने इसे स्टूडियो माफी करार देते हुए अस्वीकार कर दिया। डॉक्टरों ने मंत्री से उसी वार्ड में सार्वजनिक माफी मांगने की मांग की है, जहां उनकी बेइज्जती हुई थी, और इसके लिए 24 घंटे का अल्टीमेटम दिया है।

क्या है पूरा मामला : शनिवार को स्वास्थ्य मंत्री विश्वजीत राणे ने जीएमसीएच के कैजुअल्टी वार्ड का औचक दौरा किया। इस दौरान उन्हें एक शिकायत मिली कि एक बुजुर्ग मरीज को विटामिन बी12 का इंजेक्शन देने से मना किया गया और डॉ. कुट्टिकर ने कथित तौर पर मरीज के साथ दुर्व्यवहार किया। वायरल हुए एक वीडियो में राणे को कुट्टीकर को निलंबित करने का आदेश देते हुए और उन्हें बीच में न बोलने के लिए कहते हुए सुना जा सकता है। राणे को यह कहते हुए सुना गया कि आप अपनी जुबान पर काबू रखना सीखें, आप एक डॉक्टर हैं। मैं आमतौर पर अपना आपा नहीं खोता, लेकिन आपको खुद से व्यवहार करना होगा। चाहे आप कितने भी बोझिल क्यों न हों, आपको मरीजों के साथ ठीक से व्यवहार करना होगा। इस

घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसके बाद चिकित्सा समुदाय और विपक्षी दलों ने राणे की कड़ी आलोचना की। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) की गोवा शाखा ने मंत्री के आचरण की निंदा की, इसे अपमानजनक कृत्य बताया और निलंबन को तत्काल रद्द करने की मांग की। उन्होंने एकतरफा कार्रवाई के बजाय निष्पक्ष जांच की आवश्यकता पर भी जोर दिया। बढ़ते दबाव के बीच मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने स्थिति को शांत करने के लिए कदम उठाया और निलंबन आदेश को रद्द कर दिया। वायरल वीडियो के बाद गोवा मेडिकल कॉलेज के 600 से अधिक डॉक्टरों, सलाहकारों और इंटर्न्स ने सोमवार को अस्पताल परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। गोवा एसोसिएशन ऑफ रेजिडेंट डॉक्टर्स (जीएआरडी) और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने राणे के व्यवहार को अपमानजनक बताया और मांग की कि मंत्री कैजुअल्टी वार्ड में आकर डॉ. कुट्टिकर से सार्वजनिक रूप से माफी मांगें। डॉ. कुट्टिकर ने कहा, मेरी बेइज्जती वायरल हुई, माफी भी उसी तरह सार्वजनिक होनी चाहिए। जीएआरडी ने यह भी मांग की कि अस्पताल के मरीज देखभाल क्षेत्रों में वीडियोग्राफी पर प्रतिबंध लगाया जाए और भविष्य में किसी स्वास्थ्यकर्मी के साथ ऐसा व्यवहार न हो। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी कि यदि 24 घंटे के भीतर माफी नहीं मिली, तो वे हड़ताल पर जाएंगे।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता बताने के लिए दरगाहों-मस्जिदों के बाहर चौपाल लगाएगा भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा

लखनऊ, एजेंसी। ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी और अल्पसंख्यकों को लेकर सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी देने के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का अल्पसंख्यक मोर्चा पूरे उत्तर प्रदेश में दरगाहों, मदरसों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों जैसे धार्मिक स्थलों के बाहर चौपालें आयोजित करेगा। इसके अलावा केंद्र सरकार के 11 वर्ष पूरे होने पर मुस्लिम प्रबुद्ध वर्ग तक पहुंच बनाने के लिए अल्पसंख्यकों का पैगाम, मोदी के साथ मुसलमान विषय पर सभी महानगरों में सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों की शुरुआत 11 जून से होगी। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा की उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष कुंवर बासित अली ने मंगलवार को पीटीआई- को बताया कि मोर्चा पाकिस्तान के खिलाफ भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम का प्रतीक बन चुके ऑपरेशन सिंदूर और सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को अल्पसंख्यक वर्ग तक पहुंचाने के लिए पूरे प्रदेश में दरगाहों, मदरसों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और

गिरजाघरों जैसे धार्मिक स्थलों के बाहर चौपालें आयोजित करेगा। उन्होंने बताया कि इन चौपालों में भारतीय संविधान की पुस्तिका का वितरण भी किया जाएगा ताकि अल्पसंख्यक समाज के लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो सकें। इन चौपालों का आयोजन 11 जून को शुरू होगा। अली ने बताया कि केंद्र सरकार के 11 वर्ष पूरे होने पर मुस्लिम प्रबुद्ध वर्ग तक पहुंच बनाने के लिए अल्पसंख्यकों का पैगाम, मोदी के साथ मुसलमान विषय पर सभी महानगरों में सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे और इन सम्मेलनों की शुरुआत आगामी 12 जून को लखनऊ के अटल बिहारी वाजपेयी कन्वेंशन सेंटर में होने वाले कार्यक्रम से की जाएगी। उन्होंने बताया कि मोर्चा द्वारा आयोजित किए जाने वाले एक अलग कार्यक्रम देश का पैगाम, प्रतिभा को सम्मान में मदरसों की विभिन्न परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। इन कार्यक्रमों में देश की रक्षा की मुहिम में शहीद हुए जवानों के परिजन को भी सम्मानित किया जाएगा। उनके मुताबिक, प्रदेश के सभी जिलों में आयोजित होने वाले इन कार्यक्रमों की शुरुआत आगामी 15 जून से होगी। अली ने बताया कि आगामी 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर प्रदेश के सभी 403 विधानसभा क्षेत्रों में स्थित विभिन्न 403 मदरसों में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिनमें मदरसों के शिक्षक, विद्यार्थी और आसपास के लोग योगासन करेंगे।

इंदौर कपल केस में ज्योतिषी की हर बात सही निकली

इंदौर, एजेंसी। सोनम सच में बेवफा है,इसका सबूत है इंदौर कपल केस। पहले शादी,फिर हनीमून और बाद में सुनियोजित ढंग से मर्डर। राजा रघुवंशी की मौत ने सोनम का वो चेहरा भी सबके सामने रख दिया जिससे उसके और राजा के परिवार वाले अंजान थे। सोमवार को इस हत्याकांड पर से जब पर्दा हटा,कल से लेकर आज तक सब शीशे की तरह साफ हो गया। अब तक कई एंगल इस मर्डर से संबंधित पता चल चुके हैं। इन सब के बीच सोनम के परिवार के जान-पहचान वाले एक ज्योतिष की खूब चर्चा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सोनम-राजा की गुमशुदगी और सोनम के सही सलामत होने की भविष्यवाणी इन्हीं ज्योतिषाचार्य ने की थी।

राजा रघुवंशी हत्याकांड के बाद अब सोनम के परिवार के करीबी इस ज्योतिषी खबरों में हैं। दरअसल, जब 23 मई के बाद राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी शिलॉन्ग में गायब हुए तो सोनम के परिवार वालों ने अपने जानने वाले एक ज्योतिषी से संपर्क किया था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ज्योतिषी को सोनम रघुवंशी के परिवार वालों ने पूरी बात बताई। इसपर ज्योतिषी ने दो चीजें कही थीं। ज्योतिषी ने कहा कि सोनम और राजा रघुवंशी की गुमशुदगी के पीछे किसी औरत का हाथ है और दूसरा अगर आप लोग सोनम की तस्वीर घर की दीवारों पर उल्टी लटकाओगे,तो सोनम सकुशल मिल जाएगी।

ज्योतिषी की ये दो बातें बिल्कुल सटीक साबित हुईं। उनके कहने के बाद इस पूरे मामले की जब परतें खुलीं तो यह सच निकला कि इसके पीछे एक औरत का हाथ था। वह अलग बात है कि यह औरत और कोई नहीं बल्कि सोनम थी। दूसरी सोनम की उल्टी तस्वीर लगाने से सोनम सकुशल मिल जाने वाली बात भी सही निकली। यहां भी सोनम तो मिली पर एक कातिल के रूप में। वह अपने पति की कातिल है,रिश्तों की कातिल है,हर उस विश्वास और भरोसे की कातिल है। बता दें कि इस पूरे मामले से जुड़े लोगों कि गिरफ्तारी हो गई है। मुख्य आरोपी सोनम है और उसके बाद उसका आसिक राज कुशवाहा। बाकी तीन में आकाश,विशाल और आनंद थे। मेघालय पुलिस इन लोगों से पूछताछ करेगी,मामला कायदे से वहां की अदालत में चलेगा,हां इंदौर पुलिस केस से जुड़ी मदद कर सकती है।

शिवराज सिंह चौहान ने मुलाकातों के बाद बताया- किसानों ने नकली और घटिया कीटनाशकों तथा बीजों की बिक्री पर गहरी चिंता व्यक्त की

नईदिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान इन दिनों विकसित कृषि संकल्प अभियान (के तहत 29 मई से 12 जून तक विभिन्न राज्यों का दौरा कर रहे हैं। इस अभियान का उद्देश्य भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में कृषि क्षेत्र को सशक्त करना है। उन्होंने बताया कि आखिर देशभर के किसानों को किस बात की चिंता है। उन्होंने कहा कि किसानों ने नकली और घटिया कीटनाशकों तथा बीजों की बिक्री पर गहरी चिंता व्यक्त की है।

चौहान ने तेलंगाना यात्रा के दौरान कृषि की वर्तमान स्थिति और किसानों की प्रमुख समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि वह स्वयं किसान हैं और खेती से जुड़े रहते हैं, इसलिए समस्याओं से अनजान नहीं हैं। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 2014 के बाद खाद्यान्न उत्पादन में 40त से अधिक की वृद्धि हुई है। इसके बावजूद, उन्होंने स्वीकार किया कि कृषि क्षेत्र में अलग-अलग दिशा में काम हो रहा है, जिससे समन्वय की कमी महसूस होती है। इसी वजह से वन नेशन, वन एग्रीकल्चर, वन टीम का नारा दिया गया है। कृषि के लिए जीएसटी काउंसिल जैसे ढांचे की जरूरत? पूर्व में गठित एक समिति द्वारा कृषि के लिए जीएसटी परिषद जैसी एक स्थायी संस्था बनाने की सिफारिश की गई थी। इस पर चौहान ने कहा कि वह

पहले ही कृषि मंत्रियों के साथ तीन बैठकें कर चुके हैं और हर फसल मौसम से पहले रबी और खरीफ पर विशेष सम्मेलन होता है। हालांकि उन्होंने माना कि इस बार के दौरे से जो अनुभव मिल रहे हैं, उनके आधार पर भविष्य में एक उपयुक्त ढांचा तैयार किया जा सकता है। किसानों की प्रमुख समस्याएंः घटिया बीज और कीटनाशक एक बड़ी चिंता तेलंगाना से लेकर महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश तक, किसानों ने चौहान को कई स्थानीय समस्याएं बताईं। कहीं जलवायु परिवर्तन के कारण आम की फसल को नुकसान हुआ, तो कहीं गन्ने की किस्मों में बीमारी की शिकायत मिली। अधिकांश किसानों ने बीज और कीटनाशकों की गुणवत्ता पर सवाल उठाया और इनके खिलाफ सख्त कानून की मांग की। कृषि मंत्री ने भी नकली और घटिया कीटनाशकों की बिक्री को रोकने के लिए कड़े कानून बनाने और संतुलित उर्वरक का इस्तेमाल सुनिश्चित करने के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड के बेहतर कार्यान्वयन की बात भी कही। कृषि भूमि में हो रही कमी, लेकिन तकनीक दे रही समाधान शिवराज सिंह चौहान ने कृषि भूमि में कमी को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया, लेकिन इसके समाधान के रूप में सौर पैनलों के नीचे खेती, हाइड्रोपोनिक्स जैसी तकनीकों की बात की। उन्होंने कहा कि शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण भूमि घटेगी, लेकिन तकनीक से हम कम जमीन पर अधिक उत्पादन कर सकते हैं। इस सवाल पर उन्होंने कहा कि देश के समग्र विकास के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण जरूरी है।

निकोलस पूरन ने 29 वर्ष की उम्र में क्रिकेट को कहा अलविदा

इन खिलाड़ियों ने भी कम उम्र में क्रिकेट से लिया संयास, भारतीय भी शामिल

नई दिल्ली, एजेंसी। वेस्टइंडीज के सर्वोच्च रैंकिंग वाले टी20 बल्लेबाज निकोलस पूरन ने अपने 9 साल के अंतरराष्ट्रीय करियर को अलविदा कह दिया है। त्रिनिदाद के इस खिलाड़ी ने 29 वर्ष की उम्र में क्रिकेट से विदा लेकर सभी हैरान कर दिया।

पूरन ने वेस्टइंडीज के लिए 167 मैच खेले और 99.15 के स्ट्राइक रेट से 39.66 की औसत से 1983 वनडे रन बनाए। कभी टेस्ट मैच नहीं खेलने वाले पूरन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में सबसे ज्यादा 106 मैच खेलने वाले वेस्टइंडीज के खिलाड़ी हैं और 2,275 रन के साथ टी20 अंतरराष्ट्रीय में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। केवल पूरन ही नहीं कई ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने 30 या उससे कम की उम्र में ही क्रिकेट को अलविदा कह दिया और इसमें भारतीय क्रिकेटर भी शामिल हैं।

रवि शास्त्री (भारत)

कारण - घुटने की चोट
संन्यास - 30 की उम्र में (1992)
बल्लेबाजी के दौरान शास्त्री ने 80 टेस्ट में 3830 रन बनाए जिसमें 11 शतक और 12 अर्धशतक शामिल थे जबकि वनडे में उन्होंने 150 मैचों में 4 शतकों और 18 अर्धशतकों सहित 3108 रन बनाए थे। गेंदबाजी में उन्होंने टेस्ट में 151 और वनडे में 129 विकेट अपने नाम किए हैं। टेस्ट में शास्त्री का बेस्ट 5/75 और वनडे में 5/15 है।

क्विंटन डी कॉक (दक्षिण अफ्रीका)

संन्यास - 30 की उम्र में (2023)
टेस्ट - 54 मैचों में 38.82 की औसत के साथ 6 शतकों और 22 अर्धशतकों सहित कुल 3300 रन
वनडे - 155 मैचों में 45.74 की औसत के साथ 6770 रन, 21 शतक और 30 अर्धशतक
टी20आई - 92 मैचों में 31.51 की औसत से 2584 रन, जिसमें एक शतक और 16 अर्धशतक भी

तातेंडा ताइबू (जिम्बाब्वे)

कारण - चर्च में सेवा के लिए
संन्यास - 29 की उम्र में (2012)
टेस्ट - 28 मैचों में 30.31 की औसत और 153 के हाईएस्ट के साथ एक शतक और 12 अर्धशतक सहित 1546 रन
वनडे - 150 मैचों में 29.25 की औसत और 107 के सर्वप्रेष्ठ सहित 2 शतक और 22 अर्धशतक के साथ कुल 3393 रन
टी20आई - 17 मैचों में 28.77 की औसत और 45 के सर्वप्रेष्ठ सहित कुल 259 रन

उन्मुक्त चंद (भारत)

कारण - बेहतर विकल्प की तलाश में अमेरिका रवाना
संन्यास - 28 की उम्र में (2021)
लिस्ट ए - 120 मैचों में 41.33 की औसत और 127 के हाईएस्ट के साथ 4505 रन, 7 शतक और 5 अर्धशतक भी
टी20 - 90 मैचों में 21.89 की औसत और 125 के सर्वप्रेष्ठ स्कोर के साथ कुल 1795 रन, 3 शतक और 7 अर्धशतक

सकलैन मुश्ताक (पाकिस्तान)

कारण - घुटनों की समस्या
संन्यास - 27 साल की उम्र में (2004)
उन्होंने टेस्ट में 49 मैचों में 927 रन बनाए हैं जिसमें उनका औसत 25.73 का रहा। इस दौरान उन्होंने एक शतक और दो अर्धशतक भी लगाए। सकलैन ने टेस्ट में 2.65 की इकोनॉमी से 208 विकेट भी लिए हैं।
वनडे में सकलैन ने 169 मैचों में 711 रन बनाए हैं जबकि इस फॉर्मेट में उनके नाम 4.29 इकोनॉमी के साथ 288 विकेट्स हैं।

जेम्स टेलर (इंग्लैंड)

कारण - दिल की बीमारी
संन्यास - 26 की उम्र में (2016)
टेस्ट - 7 मैचों में 26 की औसत और 76 के हाईएस्ट के साथ 2 अर्धशतक सहित 312 रन
वनडे - 27 मैचों में 42.33 की औसत और 101 के सर्वप्रेष्ठ सहित 7 अर्धशतक के साथ कुल 887 रन

क्रेग कीसवेटर (इंग्लैंड)

कारण - आंख की चोट
संन्यास - 25 की उम्र में (2014)
वनडे - 46 मैचों में 30.11 की औसत से 1054 रन, एक शतक और 5 अर्धशतक के साथ 107 का हाईएस्ट स्कोर
टी20आई - 25 मैचों में 21.91 की औसत और 63 के सर्वप्रेष्ठ स्कोर के साथ कुल 526 रन, 3 अर्धशतक

10 वर्षीय अतीका मीर रोटैक्स यूरो ट्रॉफी में शीर्ष-10 में स्थान पाने वाली पहली भारतीय बनीं

त्रिनेक, एजेंसी । 10 वर्षीय भारतीय रेसिंग सनसनी अतीका मीर ने रोटैक्स यूरो ट्रॉफी में शीर्ष-10 में जगह बनाई है। इस उपलब्धि को हासिल करने वाली वह पहली भारतीय बन गई हैं। रोटैक्स यूरो ट्रॉफी एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कार्टिंग सीरीज है। स्टील रिंग सर्किट में आयोजित रोटैक्स यूरो ट्रॉफी राउंड 2 में अतीका मीर ने नौवा स्थान हासिल किया है। फॉर्मूला 1 से आर्थिक और तकनीकी सहायता पाने वाली पहली भारतीय अतीका ने क्वालीफाइंग में शानदार प्रदर्शन किया

और अपने ग्रुप में सातवें स्थान पर रहीं। दुर्भाग्य से उन्हें दो बंपर पेनाल्टी मिलीं, लेकिन इसके बावजूद वे हीट के बाद 10वें स्थान पर रहीं। रविवार को प्री-फ़ाइनल में, आसमान खुल गया, और इस ट्रैक पर गीले मौसम में ड्राइविंग का कोई पूर्व अनुभव न होने के बावजूद, अतीका ने अपनी असाधारण प्रतिभा दिखाई और दुनिया के सर्वश्रेष्ठ ड्राइवरों को कड़ी टक्कर दी। वह फाइनल के लिए क्वालीफाई हुई और ग्रिड पर 10वें स्थान पर रही। फाइनल और भी ज्यादा खतरनाक और गीले मौसम में आयोजित किया गया था लेकिन अतीका यहां भी शीर्ष फॉर्म में थी। शुरुआत में चार स्थान गिरने के बाद वापसी करते हुए उन्होंने नौवां स्थान हासिल किया। अतीका इस टूर्नामेंट में सर्वोच्च स्थान पर रहने वाली भारतीय और एशियाई रहीं। अतीका ने कहा, वह अद्भुत वीकेंड था, मैंने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ ड्राइवरों के साथ ड्राइविंग करके बहुत कुछ सीखा। सूखे ट्रैक पर मेरी गति बहुत अच्छी थी, और गीले पर प्रगति अच्छी थी। टीम और मेरे मैकेनिक एडम ने इस सप्ताह बहुत अच्छा काम किया और मैं उनकी, अपने माता-पिता और घर के सभी लोगों की आभारी हूं। रोटैक्स यूरो ट्रॉफी उन ड्राइवरों के लिए एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कार्टिंग चैम्पियनशिप है, जो रोटैक्स मैक्स इंजन का उपयोग करके दौड़ते हैं, जो विश्व स्तर पर सबसे लोकप्रिय कार्ट इंजनों में से एक है। फार्मूला 1 के जिन ड्राइवरों ने अपने प्रारंभिक वर्षों में इस श्रृंखला में दौड़ लगाई है, उनमें वर्तमान विश्व चैंपियन मैक्स वेरस्टैपेन, जॉर्ज रसेल, लैंडो नोरिस और वर्तमान चैंपियनशिप लीडर ऑस्कर पियास्ट्री शामिल हैं।

आरसीबी 17 हजार करोड़ में बिक सकती है-दावा- मैकडॉवल्स व्हिस्की बनाने वाली कंपनी टीम बेच रही ; आईपीएल जीतने के बाद बढ़ी कीमत

नई दिल्ली, एजेंसी। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 की चैंपियन बनी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु टीम बिक सकती है। ब्लूमबर्ग के मुताबिक मैकडॉवल्स व्हिस्की बनाने वाली कंपनी यूनाइटेड स्पिरिट लिमिटेड इसे 2 अरब डॉलर यानी करीब 17 हजार करोड़ रुपए में बेचने पर विचार कर रही है। पहले स्वविजय माल्या की कंपनी थी। माल्या के दिवालिया होने पर इसे ब्रिटिश लिकर कंपनी डियाजियो ने खरीद लिया। डियाजियो ही आरसीबी की मालिक हो गई।

क्यों बिक रही है आरसीबी?

शराब पर फोकस- आरसीबी डियाजियो के मुख्य शराब बिजनेस से अलग है। इसे बेचकर डियाजियो अपने सिर्फ शराब बिजनेस पर फोकस कर सकती है। हाई वैल्यूएशन : आरसीबी ने हाल ही में 2025 में अपनी पहली आईपीएल ट्रॉफी जीती। इसने आरसीबी की कॉमर्शियल वैल्यू बढ़ा दी है। ये बेचने का सही समय हो सकता है।
सरकार का दबाव- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय आईपीएल जैसे बड़े खेल आयोजनों में शराब और तंबाकू के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष विज्ञापनों पर पूरी तरह रोक लगाने की मांग कर रहा है। ऐसे में डियाजियो खुद को आईपीएल से अलग करना चाहता है।
आईपीएल के इतिहास में सबसे बड़ा सौदा होगा. अगर डियाजियो आरसीबी को बेचने का फैसला करती है, तो ये आईपीएल के इतिहास का सबसे बड़ा सौदा होगा। जब आईपीएल में दो नई टीमें (लखनऊ सुपर जायंट्स और गुजरात टाइटन्स) जोड़ी गई थीं, तब लखनऊ को आरपीएसजी ग्रुप ने 7,090 करोड़ रुपए में और गुजरात को सीवीसीकैपिटल ने 5,625 करोड़ रुपए में खरीदा था। ये अब तक की सबसे बड़ी फ्रैंचाइजी खरीद डील्स मानी जाती हैं।
2 बिलियन डॉलर यानी, करीब 17,000 करोड़ रुपए की की वैल्यूएशन लखनऊ सुपर जायंट्स और गुजरात टाइटन्स की खरीद से कहीं ज्यादा है।

सिर्फ भारत ही नहीं, इंग्लैंड की इस टीम के लिए खेल चुके हैं शुभमन गिल, ऐसा रहा था रिकॉर्ड

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के युवा सितारे शुभमन गिल के लिए इंग्लैंड दौरा बेहद खास होने जा रहा है. इस बार वे न केवल बल्लेबाजी से टीम का नेतृत्व करेंगे, बल्कि पहली बार टेस्ट फॉर्मेट में भारत की कप्तानी की कमान भी संभालेंगे. यह जिम्मेदारी उनके

करियर में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हो सकती है. इससे पहले इंग्लैंड की धरती पर गिल ने अपनी बल्लेबाजी से प्रभाव छोड़ा है, और अब उनकी नजरें कप्तान के तौर पर भी अपनी छाप छोड़ने पर हैं. खास बात यह है कि गिल इंग्लैंड की एक टीम के लिए भी खेल चुके हैं, जिसके बारे में काफी कम फैंस जानते हैं. दरअसल, साल 2022 में शुभमन गिल ने इंग्लैंड की काउंटी क्रिकेट टीम ग्लेमोर्गन के लिए खेला था. ये पहला मौका था जब गिल काउंटी चैंपियनशिप में खेलने उतरे थे. इस दौरान उन्होंने 3 फर्स्ट क्लास मैचों में हिस्सा लिया और अपनी बल्लेबाजी से सभी का ध्यान खींचा. गिल ने 61 के शानदार औसत से 244 रन बनाए, जिसमें उनकी तकनीकी मजबूती और अनुकूलन क्षमता साफ दिखी थी. इंग्लैंड की पिचों पर स्विंग और उछाल भरी परिस्थितियों में उनके प्रदर्शन ने यह संकेत दिया कि वे भविष्य में इस चुनौतीपूर्ण मैदान पर बड़ी भूमिका निभा सकते हैं. यह अनुभव उनके लिए इस बार के टेस्ट दौरे की तैयारी में अहम साबित होगा. हालांकि, इंटरनेशनल क्रिकेट में गिल के आंकड़े इंग्लैंड में कुछ खास नहीं है. वह भारत के लिए 3 टेस्ट मैच खेलते हुए इंग्लैंड में 14.66 की औसत से 88 रन ही बना सके हैं. ऐसे में गिल की नजर इस बार अपने इन आंकड़ों को सुधारने पर रहने वाली है.

आईएसएसएफ विश्व कप:

आईएसएसएफ विश्व कप में तीन भारतीयों का डेब्यू, अनुभवी इलावेनिल से पदक की उम्मीदें

म्यूनिख, एजेंसी। महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल और पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धाओं के फाइनल मंगलवार को होंगे। इसके अलावा 10 स्पर्धाओं में से चार के लिए एलिमिनेशन और क्वालिफिकेशन शुरू होंगे।

दो बार की पदक विजेता इलावेनिल वालारिवन से मंगलवार को आईएसएसएफ (अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ) के साल के तीसरे विश्व कप के पहले दिन पदक की सबसे ज्यादा उम्मीदें होगी क्योंकि उनके अलावा देश के तीन निशानेबाज महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल और पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धाओं में पहली बार इस आयोजन में भाग लेंगे। महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल और पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धाओं के फाइनल मंगलवार को होंगे। इसके अलावा 10 स्पर्धाओं में से चार के लिए एलिमिनेशन और क्वालिफिकेशन शुरू होंगे। भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) ने इस टूर्नामेंट के लिए निशानेबाजों की 22 सदस्यीय दल भेजी है। इसमें दो बार की ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर के अलावा किरण अंकुश जाधव दो व्यक्तिगत स्पर्धाओं में भाग लेंगी। भारत पहले दिन दो पदक स्पर्धाओं में विश्व कप में पदार्पण करने वाले तीन खिलाड़ियों को मैदान में उतार रहा है। इसमें राष्ट्रीय चैंपियन अनन्या नायडू महिला स्पर्धा में तथा आदित्य मालरा और निशांत रावत पुरुष स्पर्धा में इस स्तर पर पहली बार किस्मत आजमायेंगे। भारत की दूसरी एयर राइफल निशानेबाज आर्या बोरसे भी सीनियर स्तर पर अपने शुरुआती साल में है।

वह हालांकि शानदार फॉर्म में है। उसने ब्यूनस आयर्स और लीमा में वर्ष के पहले दो विश्व कप चरणों में क्रमशः एक व्यक्तिगत फाइनल में जगह बनाई तथा दो मिश्रित टीम रजत पदक जीते। इससे दो बार की ओलंपियन और दो बार की व्यक्तिगत विश्व कप स्वर्ण पदक विजेता इलावेनिल और एशियाई चैंपियनशिप विजेता और चार बार के विश्व कप पदक विजेता वरुण तोमर को दोनों स्पर्धाओं में सीनियर की जिम्मेदारी संभालनी होगी।भारतीय राइफल कोच दीपाली देशपांडे ने सोमवार को टीम के अभ्यास सत्र से पहले कहा, म्यूनिख निशानेबाजी परिसर से हमारे निशानेबाज अच्छी तरह परिचित है। ये सभी यूरोपीय सर्किट पर विभिन्न आयोजनों के लिए कई बार यहां आ चुके है। वे अभ्यास में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, देखते हैं मुकाबले में क्या होता है। भारत ने इस साल की शुरुआत में दक्षिण अमेरिका में हुए विश्व कप के पहले दो चरणों में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया था।

एमएस धोनी आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल

नई दिल्ली, एजेंसी। विश्व कप विजेता पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया है। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने सोमवार 9 जून को यह घोषणा की। वह यह उपलब्धि हासिल करने वाले 11वें भारतीय हैं। उनसे पहले सुनील गावस्कर, सचिन तेंदुलकर, वीरेंद्र सहवाग, डायना एडुल्जी, अनिल कुंबले, बिशन सिंह बेदी, कपिल देव, राहुल द्रविड़, वीनू मांकड़ और नीतू डेविड को शामिल किया जा चुका है।

सर्वकालिक सबसे सफल कप्तानों में से एक माने जाने वाले एमएस धोनी ने भारत को 2007 टी20 विश्व कप, 2011 विश्व कप और 2013 चैंपियंस ट्रॉफी में जीत दिलाई। इसके अतिरिक्त, उनकी ही कप्तानी में 2009 में आईसीसी टेस्ट रैंकिंग के शीर्ष पर पहुंची थी। एमएस धोनी के हवाले से

आईसीसी ने लिखा, 'आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल होना सम्मान की बात है, जो दुनिया भर के क्रिकेटर्स के योगदान को पहचान देता है। ऐसे सर्वकालिक महान खिलाड़ियों के साथ अपना नाम जुड़ना एक शानदार अहसास है।

यह कुछ ऐसा है जिसे मैं हमेशा संजो कर रखूंगा।' आईसीसी ने कहा, 'भारत के लिए 17,266 अंतरराष्ट्रीय रन, 829 शिकार (कैच और स्टम्प्स) और विभिन्न फॉर्मेट्स में 538 मैच खेलने वाले धोनी के आंकड़े न केवल उत्कृष्टता, बल्कि असाधारण स्थिरता और फिटनेस को दर्शाते हैं। धोनी उन 7 पूर्व खिलाड़ियों में हैं जिन्हें आईसीसी ने सोमवार 9 जून को हॉल ऑफ फेम में शामिल किया। अन्य खिलाड़ियों में ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू हेडन, दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान ग्रीम स्मिथ, न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान डेनियल विटोरी, दक्षिण अफ्रीका के हाशिम अमला, पाकिस्तानी महिला क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान सना मीर और इंग्लैंड की सारा टेलर शामिल हैं।

जब धोनी 2004 में राष्ट्रीय टीम में शामिल हुए, तो शायद ही किसी ने सोचा होगा कि 23 वर्षीय धोनी विकेटकीपर-बल्लेबाज की भूमिका को किस तरह से नए आयाम देंगे।

जेम्स एंडरसन ने डब्ल्यूटीसी फाइनल से पहले तेज गेंदबाजों को दी खास सलाह

लंदन, एजेंसी। इंग्लैंड के महान गेंदबाज जेम्स एंडरसन ने लंदन के प्रतिष्ठित मैदान पर 29 टेस्ट मैचों में कुल 123 विकेट लिए हैं और इंग्लैंड के इस पूर्व तेज गेंदबाज ने बुधवार को शुरू

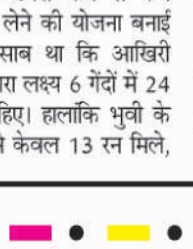

होने वाले डब्ल्यूटीसी के फाइनल टेस्ट से पहले दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाजों को सलाह दी है। दक्षिण अफ्रीका के पास कागिसो रबाडा, लुंगी एनगिडी और मार्को जेनसन जैसे तेज गेंदबाज हैं और ऑस्ट्रेलिया के पास कप्तान पैट कमिंस, मिशेल स्टार्क और लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाले जोश हेजलवुड जैसे तीन बड़े खिलाड़ी होने की संभावना है, ऐसे में दोनों टीमों के तेज गेंदबाजों के बीच मुकाबला एकमात्र टेस्ट के नतीजे को तय करने में अहम साबित हो सकता है। लॉर्ड्स में एक कार्यक्रम के दौरान एंडरसन ने कहा, यहां निश्चित रूप से आपको गेंद को ऊपर की ओर पिच करने की जरूरत है। बहुत से लोग ऑफ स्टंप के ऊपरी हिस्से की लैंथ को आदर्श मानते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि यहां यह स्टंप से तीन-चौथाई ऊपर है।

अंपायर से बहस, ग्लव्स फेंकना, बैट मारना अश्विन को पड़ा भारी

नई दिल्ली, एजेंसी। तमिलनाडु प्रीमियर लीग में एक मैच के दौरान आर अश्विन एलबीडबल्यू आउट दिए जाने के बाद अंपायर से उलझ गए. वह इतना ज्यादा गुस्सा हो गए थे कि जाते-जाते उन्होंने जोर से अपना बैट अपने पैड पर मारा. इसके बाद उन्होंने अपना ग्लव्स उतारा

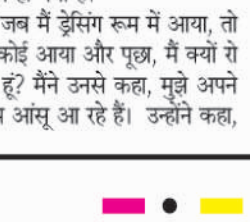

और जोर से बॉउंड्री के पार फेंक दिया. जिसके बाद तय था कि उनके खिलाफ एक्शन जरूर होगा. उन्हें आचार संहिता के उल्लंघन का दोषी पाया गया, जिसके बाद उन्हें सजा दी गई. कप्तान अश्विन को मैच रेफरी अर्जुन कृपाल सिंह ने 2 मामलों में दोषी पाया, जिसके बाद उन्हें सजा दी गई. अश्विन पर मैच फीस का 30 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया. उन्हें अंपायर से असमाहित दिखाने और क्रिकेट उपकरणों का दुरुपयोग करने के मामले में सजा दी गई. क्रिकबज ने तमिलनाडु प्रीमियर लीग के एक अधिकारी के हवाले से बताया की मैच के बाद इसकी सुनवाई हुई. अंपायरों से असहमति दिखाने के लिए फीस का 10 प्रतिशत काटा गया जबकि 20 प्रतिशत जुर्माना उपकरणों के दुरुपयोग के लिए लगाया गया.

पंजाब किंग्स के बल्लेबाज ने की भविष्यवाणी, अगले साल हम फाइनल खेलेंगे और ट्रॉफी भी जीतेंग

नई दिल्ली, एजेंसी। पंजाब किंग्स का पहला इंडियन प्रीमियर लीग खिताब जीतने का सपना 6 रन से टूट गया क्योंकि रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने मंगलवार 3 जून को फाइनल में जीत दर्ज की। पंजाब के बल्लेबाज शशांक सिंह की आखिरी क्षणों में की गई शानदार पारी की बदौलत टीम आरसीबी के 190 रनों के करीब पहुंच गई, हालांकि टीम जीत नहीं पाई। शशांक ने अब कहा कि अंतिम ओवर में जोश हेजलवुड की फुल टॉस चूकने की बात उन्हें अभी भी परेशान करती है। साथ ही उन्होंने बोल्ड बयान देते हुए कहा कि पंजाब

किंग्स अलगे साल बेंगलुरू में फाइनल खेलेंगी और हम ट्रॉफी भी जीतेंगे। शशांक ने एक मीडिया हाउस से बातचीत में कहा, मैंने आखिरी दो ओवरों का हिसाब लगाया था, भुवी को यॉर्कर पसंद है, इसलिए मैंने उनसे कम से कम 16-17 रन लेने की योजना बनाई थी। मेरा हिसाब था कि आखिरी ओवर में हमारा लक्ष्य 6 गेंदों में 24 रन होना चाहिए। हालांकि भुवी के ओवर में मुझे केवल 13 रन मिले, इसलिए अंतिम ओवर में 30 रन चाहिए थे। उन्होंने कहा, मानसिक रूप से, मेरा दिमाग हेजलवुड की पहली गेंद पर यॉर्कर लेने के लिए तैयार था।

इसलिए मैंने खुद को तैयार किया, लेकिन मैंने कभी भी फुल टॉस की उम्मीद नहीं की, वह भी मेरे जांघ के पैड पर। अब मुझे लगता है, अगर मैं इसे कनेक्ट कर लेता, भले ही यह बल्ले के हैंडल पर लग जाता, तो मैं अधिकतम रन बना सकता था, क्योंकि फाइन-लेग पास था। मैं उनसे वाइड की उम्मीद कर रहा था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जब मैंने स्कोरबोर्ड देखा, जिसमें बताया गया था कि आखिरी गेंद पर 12 रन चाहिए, तो मुझे पता था कि सब खत्म हो गया है। अंतिम ओवर की पहली गेंद पर फुल टॉस चूक जाना अभी भी शशांक को परेशान करता है। उन्होंने कहा, मैं एक मजबूत व्यक्ति हूं, लेकिन जब मैंने पांचवीं गेंद पर छक्का मारा और मैंने देखा कि आखिरी गेंद पर 12 रन चाहिए थे, तो मैं खुद को नियंत्रित नहीं कर सका। मुझे एहसास हुआ कि सब खत्म हो गया है।

जब मैं ड्रेसिंग रूम में आया, तो हर कोई आया और पूछा, मैं क्यों रो रहा हूं? मैंने उनसे कहा, मुझे अपने आप आंसू आ रहे हैं। उन्होंने कहा, मैं जहां भी गया, लोगों ने मेरी बल्लेबाजी की सराहना की, लेकिन सभी मुझे उस एक फुल टॉस मिस की याद दिला रहे हैं।

मुझे बहुत बुरा लगा। गेंद मेरे कूल्हे पर थी, स्क्वायर लेग ऊपर था, मुझे बस उसे बल्ले को हिट करना था, जो मैं नहीं कर सका। होटल से लेकर एयरपोर्ट, ग्राउंड से लेकर घर तक, हर किसी का एक ही मतलब था कि भैया वो गेंद मार देते बस। बल्लेबाज ने न केवल बेंगलुरू में आईपीएल 2026 के फाइनल में जगह बनाने का संकल्प लिया है, बल्कि खिताब भी जीतने को भी बात की।

संक्षिप्त समाचार

अमेरिकी रैपर डिडी पर एक्स-गर्लफ्रेंड से यौन हिंसा का आरोप

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिका के मशहूर रैपर और म्यूजिक प्रोड्यूसर शॉन डिडी कॉम्ब्स पर उनकी एक्स-गर्लफ्रेंड ने हिंसा और जबरन यौन संबंध बनाने के आरोप लगाए हैं। सोमवार को अदालत में गवाही देते हुए पीड़ित ने बताया कि 2024 में एक रात कॉम्ब्स ने उनके साथ मारपीट की, गला दबाया और चेहरे पर मुक्का मारा। इसके बाद एक पुरुष सेक्स वर्कर को बुलाकर उनके साथ जबरन 'फ्रीक-ऑफ' जैसी सेक्सुअल एक्टिविटी कराई। महिला की पहचान सार्वजनिक नहीं की गई है। वह कोर्ट में जेन नाम से पेश हो रही है। पेशी के तीसरे दिन सोमवार को उसने बताया कि वह 18 जून 2024 की रात कॉम्ब्स के साथ रोमांटिक शाम बिताने का प्लान कर रही थी, लेकिन वह रात उसके लिए एक भयानक दिन बन गई। महिला के मुताबिक, कॉम्ब्स पर बेवफाई का आरोप लगाने के बाद वह गुस्से में आ गए। उन्होंने महिला का पीछा किया, उसे जमीन पर गिराया, दरवाजे तोड़े, चेहरे पर मुक्का मारा और गला दबाया। महिला ने बताया कि उसने भागने की कोशिश की लेकिन कॉम्ब्स ने उसे लात मारकर गिरा दिया और बाल या हाथ पकड़कर फिर से अंदर घसीटा। फिर उन्होंने एक पुरुष सेक्स वर्कर को बुलाया, उसे एक्स्टेसी की गोली दी। इसके बाद कॉम्ब्स ने उससे, पीड़ित के साथ जबरन संबंध बनाने के लिए कहा। जब महिला ने इसका विरोध किया तो, कॉम्ब्स ने कहा कि तुम इस तरह मेरी रात खराब नहीं करोगी। कॉम्ब्स पर पहले भी यौन हिंसा के आरोप लगे हैं। नवंबर 2023 में उनकी पूर्व प्रेमिका और मशहूर सिंगर कैसी (कैसेंड्रा वेंटुरा) ने उन पर मुकदमा दायर किया था। इसमें दावा किया गया कि कॉम्ब्स ने उसे ड्रग्स के असर में हफ्तों तक फ्रीक-ऑफ सेक्सुअल सेशन में शामिल किया। कॉम्ब्स ने यह मुकदमा एक दिन में ही 2 करोड़ डॉलर में सुलझा लिया था। जेन ने कहा कि जब उसने कैसी का मुकदमा पढ़ा, तो वह तीन दिन तक रोती रही और बीमार महसूस करने लगी।

जैविक सामग्री की तस्करी के आरोप में एक और चीनी वैज्ञानिक गिरफ्तार; बीते सप्ताह भी दो लोगों को पकड़ा गया था

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में अवैध जैविक सामग्री की तस्करी मामले में एक और चीनी वैज्ञानिक को गिरफ्तार किया गया है। अमेरिकी सीमा शुल्क एवं सीमा सुरक्षा में क्षेत्रीय प्रमुख जॉन नोवाक ने इस बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि रविवार को अमेरिका पहुंचते ही डेट्रॉयट हवाई अड्डे पर चीनी वैज्ञानिक को हिरासत में लेकर उससे पूछताछ की गई। इसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। एफबीआई ने बताया कि गिरफ्तार चीनी वैज्ञानिक वुहान में हुआझोंग यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी में एडवांस डिग्री हासिल कर रही हैं। उसने मिशिगन यूनिवर्सिटी में एक प्रोजेक्ट पूरा करने के लिए एक साल बिताने की योजना बनाई थी। इस वैज्ञानिक पर आरोप है कि उन्होंने महीनों पहले मिशिगन विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में कर्मचारियों को जैविक सामग्री भेजी थी। एफबीआई ने मामले में अदालत में दाखिल अपने दस्तावेज में कहा है कि यह सामग्री कुछ खास किस्म के फंगस से संबंधित है। इसके लिए सरकार की अनुमति की आवश्यकता होती है। वहीं,जॉन नोवाक ने कहा कि शोध उद्देश्यों के लिए अमेरिका में जैविक सामग्री के आयात के दिशानिर्देश कड़े लेकिन स्पष्ट हैं। इस तरह की तस्करी से अन्य अतिथि शोधकर्ताओं के वैध कार्य को कमजोर होते हैं और उन्हें संदेह का सामना करना पड़ता है।

सिंगापुर में 1800 साल पुराने श्री सिवन मंदिर में भव्य अभिषेक समारोह, 20,000 श्रद्धालुओं हुए शामिल

सिंगापुर, एजेंसी। सिंगापुर के सबसे पुराने हिंदू मंदिरों में शामिल श्री सिवन मंदिर अभिषेक समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान 1,800 की शताब्दी से भी पुराने इस मंदिर में 20,000 से अधिक श्रद्धालु जुटे। राष्ट्रीय सुरक्षा समन्वय मंत्री व गृह मंत्री के. षणमुगम गेलांग ईस्ट मंदिर के नाम से मशहूर मंदिर में श्रद्धालुओं के साथ शामिल हुए। वह बोले, आज का अभिषेक समारोह महत्वपूर्ण है, क्योंकि सिंगापुर में हिंदू समुदाय के दिल में इस मंदिर का विशेष स्थान है। षणमुगम ने समारोह की पट्टिका का अनावरण भी किया। सुबह 7 बजे से ही मंदिर के बाहर विशेष रूप से बनाए गए तंबुओं में पहुंचे श्रद्धालु महाकुंभाभिषेकम का बेसब्री से इंतजार करने लगे। यह मंदिर की छत पर बर्तनों से पवित्र जल डालने की प्रक्रिया है। कुंभम कहे जाने वाले पात्रों में जल भरा जाता है और लगातार सात दिन तक संस्कृत मंत्रों के जाप के माध्यम से इन्हें ऊर्जाप्रदान की जाती है। द स्ट्रेट्स टाइम्स के मुताबिक, हिंदू बंदोबस्ती बोर्ड ने कहा कि मंदिर में 26 जुलाई तक 48 दिन प्रार्थना, अनुष्ठान और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

अमेरिका हिंसा-ट्रम्प ने लॉस एंजिलिस 2000 नेशनल गार्ड्स और भेजे : अब कुल 4000 की तैनाती

लॉस एंजिलिस, एजेंसी। अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया के लॉस एंजिलिस में 4 दिनों से जारी हिंसा में अब तक दो लोगों की मौत हो चुकी है। यह हिंसक प्रदर्शन अवैध अप्रवासियों को बाहर निकालने के फैसले के खिलाफ हो रहे हैं। इस प्रदर्शन को काबू करने के लिए ट्रम्प प्रशासन ने 2000 नेशनल गार्ड्स और तैनात करने का फैसला किया है, जिससे इनकी कुल संख्या 4000 हो जाएगी। इसके अलावा 700 मरीन कमांडो भी तैनात करने का फैसला किया है। यह नेशनल गार्ड के साथ मिलकर सुरक्षा व्यवस्था संभालेंगे। ये मरीन जवान दक्षिण कैलिफोर्निया के ट्वेंटी नाइन पाम्स बेस से आ रहे हैं। अमेरिकी अधिकारियों ने बताया कि यह तैनाती अगले कुछ घंटों में हो सकती है। इससे पहले ट्रम्प ने लॉस एंजिलिस में फैली हिंसा और तोड़फोड़ के बाद वहां तैनात किए गए नेशनल गार्ड के जवानों की तारीफ भी की। ये जवान आमतौर पर राज्य के गवर्नरों के आदेश पर बुलाए जाते हैं, लेकिन इस बार ट्रम्प ने खुद उनकी तैनाती कर दी।

ट्रम्प ने कैलिफोर्निया के गर्वनर की गिरफ्तारी का समर्थन किया : राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि अगर कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसम को गिरफ्तार किया जाए, तो यह अच्छा कदम होगा। गेविन लॉस एंजिलिस में नेशनल गार्ड्स की तैनाती का विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि इसके खिलाफ राज्य सरकार ट्रम्प पर केस करेगी। ट्रम्प ने कहा, +न्यूसम ने बहुत खराब काम किया है। उनका सबसे बड़ा जुर्म है कि वो फिर से गवर्नर बनना चाहते हैं।+ उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें न्यूसम पसंद हैं, लेकिन कामकाज में कमजोर लगते हैं।

ट्रम्प के सहयोगी और बॉर्डर अधिकारी टॉम होमन ने पहले कहा था कि अगर कोई सरकारी अधिकारी फेडरल कानून में रुकावट डालेगा तो उसे गिरफ्तार किया जा सकता है। हालांकि बाद में उन्होंने साफ किया कि न्यूसम की गिरफ्तारी का कोई प्लान नहीं है, लेकिन कोई भी कानून से ऊपर नहीं है।

प्रदर्शनकारी अमेरिकी झंडे पर थूकते नजर आए : भारतीय समयानुसार सोमवार को हुए प्रदर्शन के दौरान उपद्रवियों ने सैकड़ों गाड़ियों को जला दिया। कई प्रदर्शनकारी अमेरिकी झंडे पर थूकते नजर आए। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने आदेश दिया है कि जो लोग प्रदर्शन के दौरान मास्क पहन रहे हैं, उन्हें तुरंत गिरफ्तार किया जाए। प्रदर्शनकारी मास्क पहनकर सड़कों पर उतर रहे हैं ताकि वे सुरक्षा कैमरों से बच सकें। ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर लिखा कि शहर पर अवैध अप्रवासियों का कब्जा है, इसे जल्द आजाद कराया जाएगा।

ऑस्ट्रेलियाई रिपोर्टर को गोली लगी : विरोध प्रदर्शनों को कवर कर रही ऑस्ट्रेलियाई पत्रकार लॉरेन टोमासी पर पुलिस ने रबर बुलेट फायर कर दी। यह घटना रविवार को उस समय हुई जब नाइन न्यूज की पत्रकार लॉरेन टोमासी लाइव रिपोर्टिंग कर रही थीं। वायरल हुए वीडियो में दिखा कि रबर बुलेट उनकी टांग में लगी लॉरेन ने कहा- कई घंटों की तनातनी के बाद स्थिति अब तेजी से बिगड़ गई है। लॉस एंजिलिस पुलिस घोड़ों पर सवार होकर प्रदर्शनकारियों पर रबर बुलेट दाग रही है और उन्हें शहर के सेंटर से हटा रही है।÷ इस दौरान पीछे से एक पुलिस अधिकारी की आवाज आई, जो कह रहा था कि तुमने अभी पत्रकार को गोली मारी। किसी ने लॉरेन से पूछा कि क्या वह ठीक हैं, तो उन्होंने जवाब दिया- मैं ठीक हूं।

लॉस एंजिलिस में नेशनल गार्ड तैनात किए : राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने लॉस एंजिलिस में हालात को काबू करने के लिए 2000 नेशनल गार्ड्स को भेजा है। हालांकि कैलिफोर्निया के गवर्नर गैविन न्यूसम और लॉस एंजिलिस की मेयर कैरेन बैस ने नेशनल गार्ड्स भेजने का विरोध किया है। यह पहला मौका है जब किसी राज्य में नेशनल गार्ड को बिना गवर्नर की अनुमति के भेजा गया। लॉस एंजिलिस में 6-7 जून को सरकार ने अवैध अप्रवासियों के खिलाफ एक अभियान चलाया था। इसी का विरोध हो रहा है। छापेमारी राष्ट्रपति ट्रम्प की डिपोर्टेशन पॉलिसी का हिस्सा है।

अमेरिकी सेना की 250वीं वर्षगांठ और ट्रंप के जन्मदिन पर होगी सैन्य परेड, किए जा रहे कड़े सुरक्षा इंतजाम

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में शनिवार को अमेरिकी सेना की 250वीं वर्षगांठ और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का 79वां जन्मदिन मनाने की तैयारी हो रही है। इस मौके पर सैन्य परेड होगी। इसके लिए कड़े सुरक्षा इंतजाम किए गए हैं। 18 मील इलाके में फेंसिंग की गई हैं। जबकि 175 मैग्नेटोमीटर लगाए गए हैं। सीक्रेट सर्विस के वॉशिंगटन फील्ड ऑफिस के मैट मैककूल ने कहा कि हम भारी भीड़ के लिए तैयारी कर रहे हैं। 18 मील से अधिक एंटी-स्केल फेंसिंग लगाई जाएगी। जबकि कई ड्रोन हवा में होंगे। कोलंबिया का पूरा जिला आमतौर पर ड्रोन के लिए नो-फ्लाई जोन होगा। सीक्रेट सर्विस के वॉशिंगटन फील्ड ऑफिस के मैट मैककूल ने कहा कि हम भारी भीड़ के लिए तैयारी कर रहे हैं। 18 मील से अधिक एंटी-स्केल फेंसिंग लगाई जाएगी। जबकि कई ड्रोन हवा में होंगे। कोलंबिया का पूरा जिला आमतौर पर ड्रोन के लिए नो-फ्लाई जोन होगा। सेना के अधिकारियों का अनुमान है कि शाम की सैन्य परेड में लगभग दो लाख लोग शामिल होंगे। मैककूल ने कहा कि हम लाखों लोगों के लिए तैयार हैं। हमारे पास एक टन मैग्नेटोमीटर है। अगर दस लाख लोग आते हैं, तो हमें कुछ लाइनें लगानी पड़ेंगी।

दिन में मनेगा जन्मदिन, रात में होगी परेड : कार्यक्रम के दौरान दिन में ट्रंप का जन्मदिन समारोह मनाया जाएगा। जबकि रात के वक्त सैन्य परेड होगी। इसके लिए सुरक्षा चौकियों पर 175 मैग्नेटोमीटर लगाए जाएंगे। मेट्रोपॉलिटन पुलिस विभाग की प्रमुख पामेला स्मिथ ने कार्यक्रम को लेकर ट्रैफिक एडवाइजरी जारी की। उन्होंने कहा कि लोग कार्यक्रम में समय से पहले आएं। साथ ही कारों की जगह मेट्रो से पहुंचें। उन्होंने कहा कि यह बड़ा आयोजन है। हम जनता पर भरोसा कर रहे हैं कि वे हमारे लिए अतिरिक्त कान और आंखें बनेंगे।

सेना की वर्षगांठ के जश्न की योजना महीनों पहले से ही बनाई जा रही थी। लेकिन ट्रंप ने इस कार्यक्रम को बदल दिया था। वे 79वें जन्मदिन पर कार्यक्रम कराना चाह रहे थे। उन्होंने 60 टन के एम1 अब्राम युद्धक टैंकों और पैलाडिन स्व-चालित हॉवित्जर के साथ शहर की सड़कों पर घूमते हुए एक विशाल सैन्य परेड का एलान किया गया था।

रूस बनाएगा ईरान में आठ न्यूक्लियर प्लांट

तेहरान , एजेंसी। ईरान के एटॉमिक चीफ ने घोषणा की है कि रूस दोनों देशों के बीच पहले से हस्ताक्षरित अनुबंध के तहत ईरान में आठ न्यूक्लियर पावर प्लांट बनाएगा। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, सोमवार को ईरानी संसद की राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति समिति के सदस्य तेहरान में ईएओआई हेडक्वार्टर के दौरे पर पहुंचे, जहां ईरान के एटॉमिक एनर्जी ऑर्गेनाइजेशन (ईएओआई) के अध्यक्ष मोहम्मद इस्लामी ने इस बारे में जानकारी दी। मोहम्मद इस्लामी ने बताया कि आठ न्यूक्लियर रिएक्टर में से चार बुशहर के दक्षिणी प्रांत में बनाए जाएंगे। मोहम्मद इस्लामी ने मौजूदा बुशहर न्यूक्लियर पावर प्लांट में यूनिट-2 और यूनिट-3 के चल रहे निर्माण पर सांसदों को जानकारी दी। इन यूनिट्स का निर्माण ईरानी कंपनियां कर रही हैं। पत्रकारों से बात करते हुए इस्लामी ने बताया कि ईएओआई की योजना देश की व्यापक ऊर्जा विकास रणनीति के हिस्से के रूप में ईरान की परमाणु ऊर्जा उत्पादन क्षमता को तीन गुना करना है। बुशहर प्लांट का निर्माण मई 2011 में रूस ने किया था, जो ईरान की पहली और एकमात्र चालू परमाणु ऊर्जा सुविधा है। ये देश के सिविलियन न्यूक्लियर एनर्जी प्रोग्राम का केंद्र रहा है।

पाकिस्तानियों को कुवैत ने दिया तोहफा, 19 साल बाद हटाया वीजा बैन, हजारों को नौकरी मिलने का रास्ता साफ

कुवैत सिटी, एजेंसी। कुवैत ने 2011 में पाकिस्तान सहित कई देशों पर वीजा बैन लगा दिया था। इसका कारण क्षेत्रीय अस्थिरता, आतंकवाद और सुरक्षा चिंताएं थीं। पाकिस्तान, ईरान, अफगानिस्तान, सीरिया और यमन जैसे देशों के नागरिकों के लिए वीजा प्रक्रिया पूरी तरह से रोक दी गई थी। कुवैत सरकार का कहना था कि इन देशों से आने वाले प्रवासी मजदूरों और स्थानीय नागरिकों के बीच सामाजिक तनाव और सुरक्षा को खतरा था, जिस कारण यह प्रतिबंध लगाया गया था।

अब वीजा बैन हटा, पाक नागरिकों को राहत : अब कुवैत सरकार ने एक नई शुरुआत करते हुए यह वीजा प्रतिबंध तत्काल प्रभाव से हटा दिया है। इस फैसले से पाकिस्तान के लाखों नागरिकों के लिए रोजगार, शिक्षा और व्यापार के नए अवसर खुल गए हैं। अब पाकिस्तानी नागरिक कुवैत के लिए वर्क वीजा, फैमिली विजिट वीजा, बिजनेस वीजा और टूरिस्ट वीजा के लिए आवेदन कर सकेंगे। कुवैत सरकार का यह निर्णय ऐसे समय में आया है जब वहां का हेल्थ और कंस्ट्रक्शन सेक्टर दक्ष श्रमिकों की भारी मांग से जूझ रहा है। खासतौर पर हेल्थ सेक्टर में सुधार के लिए कुवैत ने 1200 पाकिस्तानी नर्सों की भर्ती की योजना बनाई है। इसके लिए वीजा प्रक्रिया को सरल और तेज किया गया है।

आईटी, निर्माण और जनरल लेबर सेक्टर में नौकरियां उपलब्ध : रिपोर्ट्स के मुताबिक, कुवैत की सरकार आईटी, जनरल लेबर, निर्माण, और मेडिकल जैसे सेक्टर्स में विदेशी कामगारों को प्राथमिकता दे रही है। पाकिस्तानी वर्कर्स को अब कुवैत में वैध रोजगार पाने का सुनहरा मौका मिलेगा। इसके साथ ही कुवैत सरकार इन क्षेत्रों में कुशल और अर्ध-कुशल कामगारों की नियुक्ति पर ज़ोर दे रही है। पाकिस्तान के लिए आर्थिक संकट के बीच राहत पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था इस समय गंभीर संकट से गुजर रही है। देश में डॉलर की भारी कमी, बेरोजगारी, और बढ़ती महंगाई ने आम नागरिकों की कमर तोड़ दी है। आईएमएफ के साथ कर्ज पैकेज की बातचीत अभी भी जारी है। ऐसे में कुवैत द्वारा वीजा बैन हटाना पाकिस्तान के लिए आर्थिक राहत की किरण के रूप में देखा जा रहा है। कुवैत में काम करने वाले पाकिस्तानी नागरिक अपने परिवारों को विदेशी मुद्रा (डॉलर) के रूप में रेमिटेंस भेजते हैं, जिससे देश के विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूती मिलती है। इसलिए वीजा बहाली को पाकिस्तानी सरकार के लिए एक कूटनीतिक और आर्थिक सफलता माना जा रहा है। द्विपक्षीय संबंधों को नया आयाम वीजा बैन हटाने का फैसला सिर्फ एक प्रशासनिक कदम नहीं है, बल्कि इसे कुवैत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

बांग्लादेश के ढाका में प्रदर्शन पर रोक : यूनुस के सरकारी आवास-सचिवालय के आसपास का एरिया सील

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुखिया मोहम्मद यूनुस के खिलाफ विरोध तेज हो गया है। विपक्षी दलों, सरकारी कर्मचारियों, शिक्षकों और सेना के बीच भी नाराजगी बढ़ती जा रही है। इस बीच ढाका मेट्रोपॉलिटन पुलिस (डीएमपी) ने राजधानी के केंद्र में सभी रैलियों, विरोध प्रदर्शनों और जनसभाओं पर अनिश्चितकालीन प्रतिबंध लगा दिया है। वहीं, ढाका पुलिस ने मोहम्मद यूनुस के आधिकारिक निवास 'जमुना गेस्ट हाउस' और बांग्लादेश सचिवालय के आसपास के एरिया को पूरी तरह सील कर दिया है। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है। जब सचिवालय में काम करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों ने सरकार के एक अध्यादेश के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। डीएमपी कमिश्नर एसएम सज्जात अली ने बताया कि यह प्रतिबंध, सार्वजनिक व्यवस्था और चीफ एडवाइजर मोहम्मद यूनुस की सुरक्षा के लिए लगाया गया है। इससे पहले 10 मई को भी सरकार ने सीमा सुरक्षा बल (बीजीबी) और पुलिस की एसडब्ल्यूएटी टीमों को सरकारी इमारतों की सुरक्षा में लगाया था। ईद के बाद फिर भड़क सकते हैं प्रदर्शन फिलहाल ईद की छुट्टियों के कारण विरोध थोड़े समय के लिए थम गया है, लेकिन सरकारी कर्मचारियों ने 15 जून तक मांगें पूरी नहीं होने पर देशभर के सरकारी दफ्तरों में बड़े आंदोलन की चेतावनी दी है। बांग्लादेश सचिवालय अधिकारी-कर्मचारी एकता मंच के सह-अध्यक्ष नुरुल इस्लाम ने कहा कि आंदोलन और उग्र होगा। सेना और बीएनपी भी नाराज, शिक्षकों हड़ताल पर अगस्त 2024 से सत्ता में आई मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार को पहले ही विपक्षी दल बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) चुनावी समयसीमा तय करने की मांग को लेकर घेर रही है। सेना प्रमुख वाकर-उज-जमान भी दिसंबर 2025 तक चुनाव करवाने की सलाह दे चुके हैं। वहीं यूनुस ने अप्रैल 2026 में चुनाव कराने का संकेत दिया है, जिससे उनकी सत्ता में बने रहने की मंशा पर संदेह गहराया है।

अमेरिकी एयरपोर्ट में भारतीय छात्र से बदसलूकी, सुरक्षाकर्मियों ने पेट के बल लिटा रखा है और उसके हाथ और पैर बांध दिए

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी एयरपोर्ट पर भारतीय मूल के एक छात्र से बदसलूकी के मामले में दूतावास का बयान आया है। एक वीडियो और तस्वीरों में दिखा था कि भारतीय छात्र को न्यू जर्सी के नेवार्क एयरपोर्ट पर सुरक्षाकर्मियों ने पेट के बल लिटा रखा है और उसके हाथ और पैर बांध दिए हैं। इस वीडियो के सामने आने के बाद से ही लोग भड़के हुए थे। भारतीय छात्र के साथ अपराधियों जैसे बर्ताव का यह वीडियो मौके पर मौजूद और भारतीय-अमेरिकी कारोबारी कुणाल जैन ने बनाया था। अब इस मामले में न्यूयॉर्क स्थित भारतीय दूतावास का बयान आया है। दूतावास ने ट्वीट किया, हमने सोशल मीडिया पर ऐसी कई पोस्ट देखी हैं। इनमें दावा किया गया है कि एक भारतीय को नेवार्क लिबर्टी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर परेशानी झेलनी पड़ी। हम स्थानीय प्रशासन के संपर्क में हैं। भारतीयों के हितों की सुरक्षा के लिए कौंसुलेट तत्पर है। छात्र के वायरल वीडियो में दिखता है कि उसे दो अधिकारियों ने पकड़ रखा है और पेट के बल लिटा रखा है। वहीं दो अन्य अधिकारी उसके हाथों और पैरों को बांध देते हैं। इस दौरान भारतीय छात्र मदद की अपील करता सुनाई देता है। छात्र को अमेरिकी प्रशासन ने अवैध रूप से देश में आने के आरोप में पकड़ा था और उसे भारत वापस भेज दिया गया। कुणाल जैन ने एक्स पर लिखा, 'मैंने देखा कि एक युवा भारतीय छात्र को नेवार्क एयरपोर्ट से डिपोर्ट किया जा रहा है। बीती रात ऐसा हुआ। उसके हाथ बंध थे। उसके साथ अपराधियों जैसा सलूक हुआ। वह सपने देख रहा था, उन्हें पूरा करने आया था। उसका इरादा किसी को नुकसान पहुंचाने का नहीं था। एक एनआरआई के तौर पर मैं असहाय था और उसकी कोई मदद नहीं कर सका। यह दिल तोड़ने वाला है और मानवीय आपदा जैसा है।' कुणाल जैन ने अमेरिका में भारतीय दूतावास से भी अपील की थी कि वह इस मामले की जांच करे और छात्र को जरूरी मदद की जाए। बता दें कि अमेरिका में बड़े पैमाने पर विदेशी छात्रों और कर्मचारियों के वीजा रद्द किए जा रहे हैं।

इस्राइल में सरकार पर संकट : क्या पीएम नेतन्याहू की सत्ता खतरे में? अति-रूढ़िवादी सैन्य कानून ने बढ़ाई परेशानी

येरूशलम, एजेंसी। हमास के साथ युद्ध के बीच इस्राइली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू सरकार संकट में फंस गई है। अति-रूढ़िवादी सैन्य कानून लागू करने के चलते उनके गठबंधन के सहयोगियों ने सरकार का साथ छोड़ने का एलान किया है। इस्राइल में बुधवार को संसद भंग करने के लिए मतदान हुआ। विपक्ष का कहना है कि अगर गठबंधन के साझेदार सरकार से नाता तोड़ लेंगे तो संसद भंग हो जाएगी। अभी यह साफ नहीं है कि कौन-कौन सहयोगी सरकार का साथ देंगे।

क्या है कानून : इस्राइल में अब तक यहूदी पुरुषों को लगभग तीन साल की सैन्य सेवा करनी होती है। इसके बाद कई साल रिजर्व ड्यूटी करनी होती है। वहीं यहूदी महिलाओं को दो वर्ष अनिवार्य सेवा करनी होती है। जबकि इस्राइल में राजनीतिक रूप से सशक्त अति-रूढ़िवादी समुदाय को इससे छूट थी। यह समुदाय धार्मिक कार्य संभालता है और इसके युवाओं को 26 साल की उम्र तक सरकार वजीफा देती है। अब इस्राइल की सरकार ने अति-रूढ़िवादी सैन्य कानून के तहत इस समुदाय के लोगों को भी सेना में काम करना अनिवार्य कर दिया। इस्राइल की सुप्रीम कोर्ट ने भी 2017 में अति रूढ़िवादी को सैन्य सेवा से मिलने वाली छूट को अवैध करार दिया था।

इसलिए लागू किया जा रहा कानून : सैन्य सेवा में अति रूढ़िवादियों को शामिल करने का फैसला इसलिए लिया गया है क्योंकि हमास के हमले के बाद से सैनिकों की बड़ी जरूरत महसूस हुई है। इस्राइल ने 360,000 रिजर्व सैनिकों को सक्रिय किया है। हालात यह हैं कि कई रिजर्व सैनिकों ने गाजा में सैकड़ों दिनों की कई बार ड्यूटी की है। कुछ रिजर्व सैनिक नए बुलावे को अस्वीकार कर रहे हैं। रिजर्व ड्यूटी के लिए रिपोर्ट करने वाले इस्राइलियों की संख्या इतनी कम हो गई है कि सेना ने सेवा जारी रखने के लिए लोगों को भर्ती करने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लिया है।

अति-रूढ़िवादी पार्टियों का रुख क्या : नेतन्याहू सरकार के कानून लागू करने की तैयारी और सरकार गिराने के लिए विपक्ष ने आह्वान किया है कि अगर सरकार में शामिल अति-रूढ़िवादी साझेदार अपने समुदाय को सैन्य सेवा से छूट देने वाला कानून पारित करने में विफल रहते हैं तो उनके साथ नाता तोड़ लेंगे। नेतन्याहू के लिए हरेदीम या हिब्रू में दो पार्टियां बेहद जरूरी हैं। दोनों को सरकार को भंग करने के लिए मतदान करना होगा।

इसमें नेतन्याहू की सबसे बड़ी समर्थक पार्टी शास भी शामिल है। शास के प्रवक्ता ने कहा कि पार्टी वर्तमान में विघटन के पक्ष में मतदान करने की योजना बना रही है। जब तक कि वार्ता में कोई सफलता नहीं मिलती। दूसरी पार्टी डेगेल हाटोरा भी पिछले सप्ताह से सरकार छोड़ने की धमकी दे रही है। धर्म और राज्य मामलों के विशेषज्ञ शुकी फ्राइडमैन ने कहा कि हाटोरा युद्ध और राज्य की आर्थिक स्थिति और किसी भी अन्य चीज की परवाह नहीं करते हैं, लेकिन उनके सांप्रदायिक हित हैं। इस सांप्रदायिक हित का ध्यान सेना में सेवा करने से छूट प्राप्त करना है। हालांकि माना जा रहा है कि पीएम नेतन्याहू सरकार को बचाने के लिए कोई समझौता कर सकते हैं। अगर इस्राइल की संसद भंग हो जाती है तो सरकार को कई प्रक्रियाओं से गुजरना होगा। हिब्रू विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर गायिल तलशीर ने कहा कि यदि संसद भंग हो जाती है तो भी सरकार को अतिरिक्त मतदान सहित नौकरशाही की कई प्रक्रियाओं का सामना करना पड़ेगा। यह एक बंदूक की तरह होगा जिसे स्थिति में रखा गया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है।

सिटी टाइगर

विन्ध्य टाइगर | सीधी, बुधवार 11 जून 2025 | 8

जिले के सभी विकासखण्डों में विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत लगातार शिविर लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों में कृषि विभाग के अधिकारी और कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक किसानों को उन्नत खेती का मंत्र दे रहे हैं।

कलेक्टर ने 129 आवेदकों की सुनी समस्यायें

दिव्यांग कुंजबिहारी को तत्काल वैशाखी उपलब्ध कराने के कलेक्टर ने दिये निर्देश

रीवा

कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने 129 आवेदकों की समस्यायें सुनी तथा संबंधित आवेदनों को विभागीय अधिकारियों को प्रेषित कर संतुष्टिपूर्वक कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने जनसुनवाई के दौरान डिहिया निवासी दिव्यांग कुंजबिहारी वर्मा को तत्काल वैशाखी उपलब्ध कराने के निर्देश सामाजिक न्याय विभाग के अधिकारी को दिये।

कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित जनसुनवाई में घूमन निवासी अवधराज पाण्डेय, चोरगड़ी निवासी रामप्रसाद पटेल, भाटी निवासी गोपालशरण पाण्डेय तथा तिघरा निवासी बालमीक शुक्ला के सीमांकन कराने के आवेदनों को संबंधित तहसीलदार को प्रेषित कर कार्यवाही करने के निर्देश कलेक्टर द्वारा दिये गये। इसी प्रकार मदरी के संतोष पटेल ने सीमांकन कराकर नक्शा तरमीम किये जाने का आवेदन दिया जिसे तहसीलदार गंगेव को तथा देवगांव निवासी ममता तिवारी के नामांतरण के आवेदन को तहसीलदार मनगवां को कार्यवाही करने हेतु प्रेषित किया गया। जनसुनवाई में प्रदीप कुमार शाहपुर ने खसरा सुधार का आदेश कम्प्यूटर में फीड कराने का आवेदन दिये जिस पर एसडीएम सिरमौर को कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया। रामलाल श्रीवास्तव मझिगवां ने पुलिस की उपस्थिति में सीमांकन कराने का आवेदन प्रस्तुत किये कलेक्टर ने तहसीलदार हुजूर को कार्यवाही के निर्देश दिये। इसी प्रकार पिपरी जोकहा के निवासियों के प्रचलित रास्ता से अतिक्रमण हटाकर पुनः प्रारंभ करने तथा मिट्टीकरण कराने आवेदन को तहसीलदार सिरमौर को, बालेन्द्र शेखर गौतम जुड़वानी निवासी के अतिक्रमण हटाने के आवेदन को तहसीलदार सेमरिया को तथा स्थगन के उपरांत सीमांकन की जांच के संबंध में चुनरी निवासी प्रतिभा सिंह के आवेदन को एसडीएम त्योंथर को कार्यवाही किये जाने हेतु प्रेषित किया गया। अंबिका प्रसाद तिवारी अतरैला ने मुआवजा राशि का बैंक द्वारा प्रेषण न करने का आवेदन दिया। कलेक्टर ने एलडीएम को कार्यवाही करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई में तमरा निवासी अल्कारानी सिंह के लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत प्रमाण पत्र दिलाये जाने के आवेदन पर कलेक्टर ने जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग को कार्यवाही करने के निर्देश दिये। कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर तथा संयुक्त कलेक्टर पी.के. पाण्डेय ने भी लोगों की समस्यायें सुनीं।

किसान फसलों में उर्वरकों का संतुलित उपयोग करें : उप संचालक

किसानों को डीएपी के स्थान पर एनपीके के उपयोग की सलाह

रीवा। जिले के कृषकों को सलाह दी गई है कि वह डीएपी के स्थान पर एनपीके उर्वरकों का प्रयोग करें। कृषि वैज्ञानिकों ने अपनी सलाह में कहा है कि डीएपी में केवल दो तत्व नाइट्रोजन व फास्फोरस प्राप्त होते हैं। जबकि एनपीके उर्वरक से फसलों के लिए आवश्यक सभी तीन मुख्य पोषक तत्वों नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश की उपलब्धता होती हैं। इस प्रकार एनपीके उर्वरक से नत्रजन एवं स्फुर के अलावा पौधों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व पोटाश की पूर्ति किसान भाई सफलतापूर्वक कर सकते हैं। अतः एनपीके उर्वरक का प्रयोग करने पर किसान भाईयों को अलग से पोटाश डालने की जरूरत नहीं पड़ती है व लागत में कमी आती है। उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने किसान भाईयों के लिए डीएपी के स्थान पर एनपीके खाद का उपयोग करने की सलाह दी है।

उप संचालक ने कहा है कि फसलों में उर्वरकों का संतुलित उपयोग लाभदायक होता है। डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फास्फेट और एनपीके का उपयोग अधिक लाभदायी है। इससे जमीन को सल्फर की प्राप्ति होती है। सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग खेत की तैयारी के समय किया जाता है। जिससे यह फसलों में अधिक कारगर रहता है। डीएपी में उपलब्ध 18 प्रतिशत नाइट्रोजन में से केवल 15 प्रतिशत नाइट्रोजन तथा 46 प्रतिशत फास्फोरस में से 39 प्रतिशत फास्फोरस पानी में घुलकर मिट्टी को प्राप्त होता है। शेष फास्फोरस मिट्टी में जमा हो जाता है जिससे मिट्टी कठोर हो जाती है। इसकी जल धारण क्षमता घटती है। उप संचालक ने बताया है कि आगामी फसल में शंकर धान एवं शंकर मक्का के लिए नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश एनपीके खाद का उपयोग अधिक लाभकारी होगा। दलहन एवं तिलहन फसलों में 80:40:30 एनपीके तथा सल्फर का उपयोग लाभदायी होगा।

उप संचालक ने बताया है कि किसान नैनो तकनीक पर आधारित खाद का भी उपयोग कर सकते हैं। फसलों के लिए 20 प्रतिशत नाइट्रोजन से युक्त नैनो यूरिया तथा 8 प्रतिशत नाइट्रोजन एवं 16 प्रतिशत फास्फोरस से युक्त नैनो डीएपी उपलब्ध है। इनके निर्धारित मात्रा में उपयोग से फसलों को संतुलित मात्रा में पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। सामान्य तौर पर एक स्वस्थ पौधे में नाइट्रोजन की मात्रा 1.5 से 4 प्रतिशत तक होती है। फसलों की बढ़वार की स्थिति में इनमें नैनो यूरिया एवं नैनो डीएपी का पत्तियों में छिड़काव करने से पौधों को कारगर तरीके से नाइट्रोजन और फास्फोरस की उपलब्धता हो जाती है। इनके उपयोग से पैदावार में वृद्धि होती है तथा मिट्टी के स्वास्थ्य में भी सुधार होता है।

शाकीय भूमि से अतिक्रमण शीघ्र हटाने के दिये निर्देश : ननि आयुक्त

रीवा। नगर निगम एवं राजस्व दल द्वारा अमहिया रोड़ पर किये गये अतिक्रमण एवं अवैध निर्माण का पूर्व में चिन्हांकन किया गया था जिसको निगमायुक्त डॉ0 सौरभ सोनवणे द्वारा दिनांक 10 जून 2025 को भ्रमण करते हुये स्थलीय निरीक्षण कर अवलोकन किया गया। उन्होंने अधीनस्थों को उन स्थानों पर जहाँ शासकीय भूमि पर अतिक्रमण है उन्हें शीघ्र हटाने की कार्यवाही के निर्देश

दिए एवं शेष भूमि के अभिलेख मगायें जाने के उपरांत जॉच कर नियमानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कोठी कम्पाउण्ड की ओर से अमहिया जाने वाले मार्ग में अतिक्रमण चिन्हित कर हटाये जाने के निर्देश दिए। साथ ही गॉधी काम्प्लेक्स प्रकाश चौराहा के पास जो दुकानदार है उनको अभिलेख के साथ चर्चा कराये जाने हेतु निर्देश दिए।

साथ ही गॉधी काम्प्लेक्स में चल रहे निर्माण कार्यो का निरीक्षण किया गया। इस दौरान सहायक यंत्री श्री एसके गर्ग, श्री अम्बरीश सिंह, अतिक्रमण प्रभारी श्री सुखेन्द्र चतुर्वेदी मौजूद रहे।

कलेक्टर आज करेंगी ग्रामीण विकास विभाग की योजनाओं की समीक्षा

रीवा। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल की अध्यक्षता में 11 जून को ग्रामीण विकास विभाग अन्तर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की समीक्षा की जायेगी। कलेक्ट्रेट सभागार में सुबह 11 बजे से आयोजित बैठक में जनपद पंचायतों के सीईओ, आरईएस के कार्यपालन यंत्री, सहायक यंत्री, उपयंत्री तथा जिला पंचायत के अधिकारी उपस्थित रहेंगे। सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर ने संबंधितों को अद्यतन जानकारी के साथ उपस्थिति के निर्देश दिये हैं। बैठक में जल गंगा संवर्धन अभियान प्रधानमंत्री आवास, नल जल योजना तथा सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों की समीक्षा की जायेगी।

कृषि वैज्ञानिक विकसित कृषि संकल्प अभियान में दे रहे उन्नत खेती की जानकारी

रीवा। जिले के सभी विकासखण्डों में विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत लगातार शिविर लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों में कृषि विभाग के अधिकारी और कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक किसानों को उन्नत खेती का मंत्र दे रहे हैं। शिविरों में किसानों को कृषि, पशुपालन तथा मछली पालन विभाग की योजनाओं की जानकारी देने के साथ-साथ जल प्रबंधन और जल संरक्षण के लिए भी जागरूक किया जा रहा है। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने बताया कि 10 जून को रीवा

विकासखण्ड के ग्राम सुमेधा और बिहरा में शिविर लगाए गए। इनमें कृषि वैज्ञानिक डॉ चन्द्रजीत सिंह ने किसानों को फसलों की कतार से कतार में बोनी, खरपतवार नियंत्रण तथा फसल में खाद के संतुलित उपयोग की जानकारी दी। किसानों को उनके खेतों की माटी का परीक्षण कराकर मृदा हेल्थ कार्ड बनाने की समझाइश दी गई। शिविर में किसानों को मिल रही उपयोगी जानकारी की प्रशंसा करते हुए सरपंच बिहरा तथा प्रगतिशील किसान अजय सिंह ने कहा कि किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की सलाह दी गई। किसानों को कई आधुनिक कृषि उपकरणों के उपयोग की जानकारी दी। कृषि विभाग किसानों के बीच जाकर सदैव मार्गदशन करे।

ननि आयुक्त ने व्यापारी संघ की बैठक

रीवा। प्रकाश चौराहा स्थित प्रकाश कॉम्प्लेक्स एवं लक्ष्मी मार्केट के व्यापारियों द्वारा दुकानों के सामने सामग्री रखने, वाहन खड़ा करने एवं कॉम्प्लेक्स की गैलरी में अव्यवस्थित ढंग से सामान रखने की शिकायतों को निगमायुक्त डॉ. सौरभ सोनवणे ने गंभीरता से लिया है। इस संबंध में आज संबंधित व्यापारियों को नगर निगम कार्यालय में बुलाकर

चर्चा की गई और स्पष्ट रूप से समझाइश दी गई। निगमायुक्त ने व्यापारियों को निर्देशित किया कि वे अपनी दुकानों के बाहर किसी भी प्रकार का सामान न रखें और कॉम्प्लेक्स की गैलरी को खाली रखें, जिससे आमजन को आवागमन में कोई असुविधा न हो। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जो व्यापारी निर्देशों का पालन नहीं करेंगे, उन्हें नोटिस जारी कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। बैठक में निगमायुक्त द्वारा शहर के विभिन्न कॉम्प्लेक्सों के व्यापारियों से प्रस्तावित नवीन व्यावसायिक योजनाओं पर भी चर्चा की गई। उन्होंने व्यापारियों से सुझाव देने और योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में सहयोग की अपेक्षा जताई। इस अवसर पर उपायुक्त श्री एम एस सिद्दीकी एवं व्यापारी प्रतिनिधियों में नरेश काली, नारू भाई, बसंत वस्त्रालय, अमीन टेलर्स सहित अन्य व्यापारीगण उपस्थित रहे।

रक्तदान शिविर आयोजन संबंधी बैठक आज

रीवा। आगामी 14 जून को जिला चिकित्सालय में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर आयोजन संबंधी बैठक कलेक्टर कार्यालय स्थित मोहन सभागार में 11 जून को शाम 4 बजे से आहूत की गई है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने संबंधितों से उपस्थिति की अपेक्षा की है।

किसानों को खेती से जुड़ी समस्याओं के निदान के लिए दिया गया मार्ग दर्शन

मऊगंज। विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत अभियान के तहत मऊगंज जिले के ग्राम पंचायत खैरा, ग्राम पंचायत रजिगवां तथा ग्राम पंचायत गौरी में शिविर लगाए गए। इनमें कृषि वैज्ञानिक डॉ राजेश सिंह, डॉ एसएम कुर्मवंशी एसएडीओ यूसी हतागले, निकिता गुप्ता, मनु द्विवेदी तथा अन्य विभागों के अधिकारियों ने किसानों को उपयोगी जानकारी दी। शिविर में किसानों की खेती से जुड़ी समस्याओं के निदान के लिए मार्गदर्शन दिया गया। शिविर में बताया गया कि किसानों के लिए डीएपी के स्थान पर यूरिया तथा 20:20:0:13 खाद का उपयोग अधिक लाभकारी है। किसान एनपीके 19:19:19 का फसलों पर छिड़काव करके अधिक पैदावार ले सकते हैं। डॉ राजेश सिंह ने किसानों को प्याज और आलू की खेती से जुड़ी महत्वपूर्ण तकनीकी जानकारियाँ दीं। किसानों को हैप्पी सीडर के उपयोग से नरवाई को खाद बनाने की सलाह दी गई। किसानों को जैविक विधि से कीटनाशक तैयार करने एवं श्री अन्न की खेती के संबंध में मार्गदर्शन दिया गया।

छात्रावास अधीक्षकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण 14 जून को

रीवा। कमिश्नर बीएस जामोद द्वारा जनजातीय कार्य विभाग के तहत संचालित छात्रावास की व्यवस्थाओं को बेहतर करने एवं रिक्त सीटों में शत-प्रतिशत भर्ती के निर्देश दिए गए हैं। इसके परिपालन में छात्रावास अधीक्षकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण 14 जून को सुबह 11 बजे से कलेक्ट्रेट सभागार रीवा में आयोजित किया जा रहा है। इस संबंध में जिला संयोजक जनजातीय कार्य विभाग कमलेश्वर सिंह ने बताया कि प्रशिक्षण में ज्ञानोदय विद्यालय तथा कन्या शिक्षा परिसर के प्राचार्य भी शामिल रहेंगे। प्रशिक्षण में अधीक्षकों एवं प्राचार्यों की उपस्थिति अनिवार्य है।

कमिश्नर आज करेंगे कृषि तथा उनसे जुड़े विभागों की समीक्षा

रीवा। कमिश्नर कार्यालय में 11 जून को सुबह 11 बजे से आयोजित बैठक में रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद कृषि तथा उससे जुड़े विभागों के कार्यों की समीक्षा करेंगे। बैठक में 18 जून को प्रस्तावित कृषि उत्पादन आयुक्त की समीक्षा बैठक के एजेण्डा बिन्दुओं की विभागवार समीक्षा की जाएगी। संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी ने कृषि, उद्यानिकी पशुपालन तथा अन्य संबंधित विभाग के अधिकारियों से अद्यतन जानकारी के साथ बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया है। बैठक में संभाग के अन्य जिलों के कलेक्टर तथा संबंधित अधिकारी वर्चुअल माध्यम से शामिल होंगे।

कमिश्नर ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से की आपदा प्रबंधन की समीक्षा

आपदा प्रबंधन से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं तत्काल दें : कमिश्नर

रीवा। कमिश्नर कार्यालय में वीडियो कान्फ्रेंसिंग से रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने बाणसागर परियोजना से जुड़े जिलों में बाढ़ की स्थिति में राहत एवं बचाव तैयारियों की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि सभी जिलों के अधिकारी बाढ़ संभावित क्षेत्रों का दौरा करके 25 जून तक राहत एवं बचाव कार्य से जुड़ी तैयारियां पूरी कर लें। बाढ़ की स्थिति में राहत शिविर लगाने के लिये स्थान के चयन से लेकर बचाव दल, राहत के उपकरण, दवाओं, खाद्य सामग्री की आपूर्ति तथा बिजली एवं पानी की व्यवस्था से जुड़ी कार्यवाहियां सुनिश्चित करें। बाढ़ पर नियंत्रण के लिये समय पर सूचनाओं का आदान-प्रदान आवश्यक है। जिला तथा तहसील स्तर पर बाढ़ नियंत्रण केन्द्र स्थापित करके इनमें प्रशिक्षित कर्मचारी तैनात कर दें। सूचनाओं का एक दूसरे को लगातार आदान-प्रदान करते रहें। बांधों से पानी छोड़े जाने अथवा लगातार वर्षा की स्थिति में सभी जिले सतत संपर्क में रहें। बाढ़ से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं तत्काल दें।

कमिश्नर ने कहा कि बाणसागर बांध की अप स्ट्रीम तथा डाउन स्ट्रीम में बाढ़ संभावित क्षेत्र चिन्हांकित हैं। सभी एसडीएम अपने क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर लें। बाढ़ से बचाव के लिये व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर विभिन्न विभागों के संबंधित अधिकारियों को जोड़ें। इस ग्रुप में गांव के कुछ व्यक्तियों तथा पटवारी, ग्राम पंचायत सचिव, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जैसे मैदानी

कर्मचारियों को भी शामिल करें। समय पर सही सूचना मिलने से राहत और बचाव कार्य में आसानी होगी। बाणसागर बांध की डाउन स्ट्रीम में सीधी तथा सिंगरौली जिले के 129 गांव बाढ़ संभावित हैं। आपदा प्रबंधन के लिये संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश पत्र जारी कर दिये गये हैं। इनके अनुरूप कार्यवाही करें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए पर्याप्त दवाएं भण्डारित करा दें। बैठक में आईजी रीवा रेंज गौरव राजपूत ने कहा कि बाढ़ से बचाव के लिए समय रहते तैयारियां कर ली गईं तो कोई परेशानी नहीं होगी। बाणसागर बांध में अधिकत जल स्तर तक पानी आने से पहले ही उसे नियंत्रित रूप से छोड़ना शुरू कर दें। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम के सदस्यों तथा होमगार्ड्स एवं राहत और बचाव से जुड़े अधिकारियों के मोबाइल नम्बर व्हाट्सएप ग्रुप में अपडेट कर लें। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में नाव के साथ-साथ पर्याप्त संख्या में लाइफ जैकेट भी भण्डारित कराएं। जल संसाधन विभाग, राजस्व विभाग तथा पुलिस विभाग के अधिकारी तत्परता से बाढ़ संबंधी सूचनाओं का आदान-प्रदान करें। सभी कंट्रोल रूम एक दूसरे की सूचनाएं साझा करें।

बैठक में मुख्य अभियंता गंगा कछार अशोक डेहरिया ने बाणसागर बांध के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि बांध के जल भराव क्षेत्र में 79 गांव आंशिक रूप से डूब में आते हैं। इन गांवों में ही बाढ़ की समस्या होती है। बांध के पूरे क्षेत्र को 6 जोन में बांट कर जोनल अधिकारी तैनात कर दिये गये हैं। कटनी जिले के 27 गांव तथा उमरिया जिले के 18 गांव बांध के बैक वाटर से प्रभावित होते हैं। बैठक में लोक निर्माण विभाग को अति वर्षा की स्थिति में जलमग्न होने वाले पुल-पुलियों में संकेतक तथा बैरियर लगाने के निर्देश दिये गये। बैठक में अपर कमिश्नर नीतू माथुर, चीफ इंजीनियर पीडब्ल्यूडी संजय खाण्डे, कार्यपालन यंत्री मनोज तिवारी, कार्यपालन यंत्री आरपीएस कंवर, क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य डॉ एमएल गुप्ता, उपायुक्त श्रेयस गोखले, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी तथा संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक राजेन्द्र तिवारी द्वारा एस आर के प्रिंटिंग प्रेस विवि रोड खुटेही रीवा से मुद्रित कर जीडीसी के सामने उत्तरी करौंदिया सीधी से प्रकाशित। संपादक-राजेन्द्र तिवारी, आर.एन.आई नं. 47589/88, डाक पंजीयन : MP/SDL/DN/-30/2015-17, दूरभाष : 09424315633,7389444833